आँसू और मुस्कान

खलील जिब्रान



सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

आंसू और मुस्कान

विचार-प्रेरक तथा भावपूर्ण कृति

●

लेखक

खलील जिब्रान

●

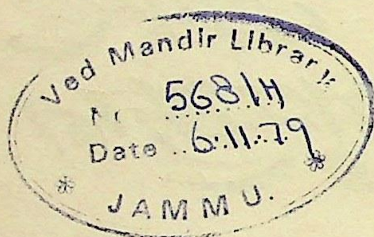
अनुवादक

किशोरीरमण टंडन : प्रकाश खन्ना

१९७८



सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन



प्रकाशक

यशपाल जैन

मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल

नई दिल्ली

●

दूसरी बार : १९७८

मूल्य : रु० ३.५०

●

मुद्रक

कामरेड प्रिंटर्स

दिल्ली

प्रकाशकीय

खलील जिब्रान के नाम और उनकी रचनाओं से हिंदी के पाठक भलीभांति परिचित हैं। 'मंडल' द्वारा प्रकाशित उनकी सभी पुस्तकें बड़ी लोकप्रिय हुई हैं।

प्रस्तुत पुस्तक की प्रस्तावना में खलील जिब्रान ने स्वयं कहा है, "मैं हृदय के हास को लाखों की दौलत से नहीं बदलूंगा, न मैं अपने ही संतृप्त अन्तर के बुलाये आँसुओं को शांति में समाने दूंगा। यह मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि धरती पर मेरा जीवन सदा आँसुओं का और मुस्कान का ही रहे।"

और पुस्तक के अन्तिम वाक्य में उन्होंने कहा है, "आज जो बात मैं अपने अकेले हृदय से कह रहा हूं, कल उसे अनगिनत हृदय कहेंगे।"

इन शब्दों में सूत्र-रूप में खलील जिब्रान का समस्त जीवन-दर्शन आ जाता है। वह हजार साल के दुख-भरे जीवन से सुखमय मृत्यु पसंद करते थे। प्रेम और सौंदर्य के वह पुजारी थे। यह सौंदर्य उन्हें प्रकृति में, सहृदयता और निष्कलुषता उन्हें दरिद्रों में और शांति सर्वव्यापक के श्री-चरणों में दृष्टिगोचर होती थी।

हमें विश्वास है कि लेखक की यह तथा अन्य भावपूर्ण पुस्तकें पाठकों को ऐसी सामग्री प्रदान करती हैं, जो उन्हें अन्यत्र नहीं मिलेगी।

—मंत्री

लेखक-परिचय

खलील जिब्रान संसार में केवल ४८ साल जिये। सन् १८८३ में उनका लेबनान में ब्शेरी नामक स्थान पर जन्म हुआ था और अपनी प्रारंभिक शिक्षा उन्होंने बेरु के मदरसात-अल-हिकमत में प्राप्त की। छोटी आयु में ही उन्होंने अपनी मातृभाषा अरबी में रचना आरंभ कर दी और अरबी कविता को एक नई गति, एक नई दिशा, दी।

खलील जिब्रान कवि ही नहीं थे। वह दार्शनिक, पत्रकार, गल्प-लेखक, आलोचक, सभी कुछ थे। अरबी साहित्य को उन्होंने एक ऐसी शैली दी, जो उनके पहले अज्ञात थी। अन्य अनेक लेखकों ने उनसे प्रेरणा ली है।

इसके अलावा वह एक महान चित्रकार भी थे। उनके चित्रों में अलौकिक रहस्य भरा पड़ा है और सभी जगह उनकी मुक्तकंठ से सराहना की गई है।

खलील जिब्रान दुनिया-भर में घूमे थे। इसीने संभवत उनके दृष्टिकोण को इतना उदार और व्यापक बनाया था।

खलील जिब्रान ने अंग्रेजी में भी रचनाएं की हैं और उनकी रचनाओं का संसार की लगभग सभी श्रेष्ठ भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

'आँसू और मुस्कान' की रचना उन्होंने २० वर्ष की अवस्था में की थी और इसकी गिनती उनकी सर्वोत्तम कृतियों में की जाती है।

—संपादक

: १ :

सृष्टि

सृष्टा ने अपने में से आत्मा को अलग किया और उसे सुन्दरता का रूप दिया।

उसने उस पर अनुकम्पा और अनुग्रह के समस्त वरदानों की वृष्टि की।

उसने उसे आनन्द का प्याला दिया और कहा, "इस प्याले से तबतक मत पीना, जबतक भूत और भविष्य को न भूल जाओ, क्योंकि आनन्द और कुछ नहीं, केवल वर्तमान क्षण है।"

और उसने उसे शोक का प्याला भी दिया और कहा, "इस प्याले में से पीना और तुम जीवन के सुख के शीघ्रता से बीतते हुए क्षणों का अर्थ समझ जाओगे, क्योंकि शोक का सदा से आधिक्य रहा है।"

और सृष्टा ने उसे वह प्यार प्रदान किया, जो उसकी सांसारिक परितृप्ति की पहली सांस पर उसे सदैव के लिए छोड़ देगा।

और एक माधुर्य प्रदान किया, जो उसके मिथ्या-प्रशंसा की चेतना के साथ लुप्त हो जायगा।

और उसने उसे परम पवित्र मार्ग पर ले जाने के लिए स्वर्गिक विवेक प्रदान किया, और उसके हृदय की गहराई में वह आंख रखी, जो अदृश्य को देखती है।

और उसके अन्तर में सब वस्तुओं के प्रति एक अनुराग और सद्भावना का सृजन किया।

उसने उसे सजाया स्वर्ग के दूतों द्वारा इंद्रधनुष के तंतुओं से बुने हुए आशाओं के वस्त्र से।

और उसने उसे पराजय की छाया से ढक दिया, जो जीवन और प्रकाश का उषाकाल है।

और तब सृष्टा ने क्रोध की भट्टी में से विनाशकारी अग्नि ली

और अज्ञान की मरुभूमि में से झुलसानेवाली आंधी, स्वार्थपरता के तट से तेजी से खिसकनेवाली बालू

और अनादि काल के पैरों के नीचे से शुष्क मिट्टी

और उन सबको मिलाकर मनुष्य का निर्माण किया।

उसने मनुष्य को एक अन्धशक्ति दी, जो प्रचण्ड गति से मनुष्य को पागलपन की ओर ले जाती है, और इच्छाओं की पूर्ति के साथ ही शान्त होती है।

फिर उसने उसके अन्दर वह जीवन डाला, जो मृत्यु का प्रेत रूप है।

और सृष्टा पहले हंसा, फिर रोया।

उसने मनुष्य के प्रति एक दुर्निवार प्यार और करुणा का अनुभव किया और फिर उसने उसे अपनी संरक्षकता का आश्रय दिया।

: २ :

मुझ पर दया करो, मेरे प्राण !

तुम रो क्यों रहे हो, मेरे प्राण ?
तुम्हें मेरी दुर्बलता मालूम है ?
तुम्हारे आंसू चुभते हैं और पीड़ा पहुंचाते हैं;
क्योंकि मैं अपनी भूल नहीं जानता।
तुम कबतक रोते रहोगे ?
मेरे पास सीधे-सादे शब्दों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है
तुम्हारे सपनों का, तुम्हारी आकांक्षाओं का,
और तुम्हारे आदेशों का भाव व्यक्त करने के लिए।

मेरी ओर देखो, मेरे प्राण, मैंने अपना सारा जीवन
तुम्हारे उपदेशों पर ध्यान
लगाने में बिता दिया है। सोचो मुझे कितना
कष्ट हो रहा है ! तुम्हारा अनुगमन करते हुए
मैंने अपना सारा जीवन समाप्त कर दिया है।

मेरा हृदय सिंहासन पर बैठा हुआ गौरव का
अनुभव कर रहा था, किन्तु अब दासता के जुए में जकड़ा है।
धैर्य मेरा साथी था, किन्तु अब
मेरा विरोध करता है।

युवावस्था मेरी आशा थी, किन्तु
अब मेरी उपेक्षा की निन्दा करती है।

मेरे प्राण, तुम सर्वस्व की मांग क्यों करते हो ?
मैंने अपने-आपको सुख से वंचित कर दिया है
और जीवन के आनन्द को त्याग दिया है,
उस मार्ग पर चलते हुए, जिसपर
चलने के लिए तुमने मुझे प्रेरित किया।
मेरे साथ न्याय करो, अथवा मुझे
बन्धनमुक्त करने के लिए, मृत्यु का आह्वान करो,
क्योंकि न्याय तुम्हारी शोभा है।

मुझपर दया करो मेरे प्राण !
तुमने मुझपर इतना प्यार लाद दिया है कि
मैं अपना भार वहन नहीं कर सकता। तुम और
प्यार अभिन्न शक्ति हो; पदार्थ
और मैं अभिन्न दुर्बलता।
शक्तिशाली और निर्बल का संग्राम
क्या कभी समाप्त होगा ?
मुझपर दया करो, मेरे प्राण !

तुमने मुझे ऐश्वर्य के दर्शन कराये हैं,
जो मेरी पहुंच से परे है। तुम और ऐश्वर्य रहते हो
पर्वत शिखर पर; दुर्भाग्य और मैं

घाटी की गहराई में साथ-साथ परित्यक्त पड़े हैं।
क्या पर्वत और घाटी,
कभी एक होंगे ?

मुझपर दया करो, मेरे प्राण !
तुमने मुझे सुन्दरता के दर्शन कराये हैं, किन्तु फिर
उसे छिपा लिया है। तुम और सुन्दरता
प्रकाश में निवास करते हो; अज्ञान और मैं
अन्धकार में एक-दूसरे से बंधे हैं।
क्या प्रकाश अन्धकार में कभी प्रवेश करेगा ?

तुम्हारा आनन्द अन्त के साथ आता है
और तुम अब उसकी आशा में हर्ष मना रहे हो;
किन्तु यह शरीर जीवन में
जीवन से पीड़ित है।
यह, मेरे प्राण, व्याकुलता है।

तुम अनन्त की ओर शीघ्रता से बढ़ रहे हो,
किन्तु यह शरीर अन्त की ओर धीरे-धीरे जा रहा है।
तुम उसके लिए ठहरते नहीं,
और वह शीघ्रता से चल नहीं सकता।
मेरे प्राण, यह शोक है।

तुम ऊंचे उठते हो, स्वर्ग के
आकर्षण द्वारा, किन्तु यह शरीर नीचे गिरता है
पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति से। तुम उसे धीरज नहीं
बंधाते और वह तुम्हारी सराहना नहीं करता।
मेरे प्राण, यह दुर्भाग्य है !

तुम बुद्धि से परिपूर्ण हो, किन्तु यह
शरीर विवेक से हीन है;
तुम समझौता नहीं करते
और वह आज्ञा नहीं मानता।
यह, मेरे प्राण, परम पीड़ा है !

रात्रि की निस्तब्धता में तुम अपने प्रिय
के पास जाते हो और उसकी उपस्थिति की
माधुरी का आनन्द लेते हो। यह शरीर सदैव
आशा और वियोग का आहत शिकार है।
मेरे प्राण, यह मर्मान्तक वेदना है।
मुझपर दया करो, मेरे प्राण !

: ३ :

दो बच्चे

एक राजा ने अपने राजमहल के छज्जे पर खड़े होकर, इस अवसर के लिए बुलाये हुए जन-समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा :

"तुम्हें और इस समस्त भाग्यशाली देश को एक नये राजकुमार के जन्म पर मुझे बधाई देने दो। यह मेरे उच्च कुल का नाम चलायेगा और इसपर तुम्हें गर्व होगा। यह एक महान और प्रसिद्ध वंश-परम्परा का नवीन उत्तराधिकारी है, और इस राज्य का उज्ज्वल भविष्य इसपर निर्भर है। गाओ और खुशियां मनाओ !"

जन-समुदाय की आनन्द और कृतज्ञता से भरी हुई आवाजों ने आकाश में आनन्ददायक संगीत की बाढ़ ला दी, इस नये निरंकुश शासक के स्वागत में, जो दुर्बलों पर निर्दय शक्ति से शासन करके और उनके शरीरों का शोषण करके और उनकी आत्माओं का हनन करके उनकी गर्दनों पर अत्याचार का जुआ लादेगा।

और इसी भविष्य के लिए लोग गा रहे थे और नये 'अमीर' की स्वास्थ्य-कामना करते हुए आनन्द से मदिरा-पान कर रहे थे।

उसी समय एक और बच्चे ने जीवन और उस राज्य में

प्रवेश किया।

और उस समय, जबकि जनता शक्तिशाली का गौरवगान कर रही थी और एक भावी कुशासक का यशोगान करके अपने-आपको गिरा रही थी, और जबकि स्वर्ग के देवदूत लोगों की दुर्बलता और दासत्व पर आंसू बहा रहे थे, एक रोगिणी स्त्री चिन्ता में लीन थी। वह एक जीर्ण-शीर्ण उजाड़ कुटिया में रहती थी और अपनी कठोर शैय्या पर चिथड़ों में लिपटे अपने नवजात शिशु के पास लेटी, भूख से मर रही थी।

वह एक निर्धन और पीड़ित युवती थी—मानव-समाज द्वारा उपेक्षित। उसका पति शासक द्वारा लगाये गये दमन के मृत्यु-जाल में फंस गया था, एक स्त्री को अकेला छोड़कर, जिसके पास परमात्मा ने, उस रात, उसे काम करने और जीवन को जारी रखने में बाधा डालने के लिए एक नन्हा-सा साथी भेज दिया था।

जब भीड़ तितर-बितर हुई और आस-पास पुनः शान्ति स्थापित हुई, उस हतभागिनी स्त्री ने बच्चे को अपनी गोद में लिया और उसके चेहरे को देखा और रो पड़ी, मानो उसे उसको अपने आंसुओं से पवित्र करना था, और भूख से क्षीण वाणी में वह अपने बच्चे से कहने लगी :

"क्यों तू पारलौकिक संसार को त्यागकर मृत्युलोक के जीवन की कटुता में मेरे साथ हिस्सा बंटाने आया है ? क्यों तू देवदूतों और अनंत आकाश को छोड़कर मनुष्य की इस दुखपूर्ण दुनिया में आया है, जो पीड़ा, अत्याचार और हृदय की हीनता से परिपूर्ण है ? मेरे पास तुझे देने के लिए आंसुओं के अतिरिक्त कुछ नहीं है। क्या तू दूध के बजाय आंसुओं से पोषित

होगा ? मेरे पास तुझे पहनाने को रेशमी कपड़े नहीं हैं। क्या मेरी नंगी और कांपती हुई बाहें तुझे गर्मी दे सकेंगी ? छोटे-छोटे पशु चरागाहों में चरते हैं और अपने स्थान पर सुरक्षित लौट आते हैं; छोटी-छोटी चिड़ियां दाना चुगती हैं और शांति से डालियों के बीच सोती हैं। परंतु तेरे पास, मेरे प्यारे, कुछ नहीं है, सिवा एक स्नेहमयी किंतु निराश्रित मां के।"

फिर उसने बच्चे को अपनी सूखी छाती से लगाया और उसको अपनी बांहों में भर लिया, मानो दो शरीरों को मिला देना चाह रही हो, पूर्ववत्। उसने अपनी जलती हुई आंखें स्वर्ग की ओर धीरे-धीरे उठाईं और चिल्लाई, "ईश्वर ! मेरे अभागे देशवासियों पर दया कर !"

उस क्षण चन्द्रमा के मुख पर से बादल हट गये और उसकी किरणें उस दरिद्र कुटिया में दरवाजे से प्रवेश कर दो लाशों पर जा पड़ीं।

: ४ :

प्रेम का जीवन

वसन्त

आओ, मेरे प्रिय, हम पहाड़ियों के बीच घूमें,
क्योंकि बर्फ पिघल गई है और जीवन अपनी नींद से
जाग गया है और पहाड़ियों और घाटियों में भ्रमण कर रहा है।
हम वसन्त के पद-चिह्नों के सहारे चलें
सुदूर खेतों में और चढ़ें पहाड़ियों की चोटी पर,
प्रेरणा लेने ठंडे-हरे मैदानों से बहुत ऊपर।

वसन्त के उषाकाल ने अपने शिशिर से ढंके वस्त्र
को उतार दिया है,
और उसे आड़ू और नारंगी के वृक्षों पर रख दिया है;
वे ऐसे दीखते हैं, जसे 'क़दर की रात' को यथा-विधि
सुसज्जित वधुएं।

द्राक्ष-लता की टहनियां एक-दूसरे का आलिंगन करती हैं
प्रेमियों के समान, और जल-स्रोत चट्टानों के बीच नर्तन
करते हैं, आनन्द का गीत दुहराते हुए;
और पुष्प यकायक प्रकृति के हृदय में से खिल उठते हैं,
सागर के परिपूर्ण हृदय में से उठते हुए भाग के समान।

आओ, मेरे प्रिय, हम कुमुदिनी के प्यालों से शिशिर के
अन्तिम आंसू पियें,
और अपने प्राणों को चिड़ियों के कलरव की झड़ी से
प्रसन्न करें, और घूमें आनन्द से,
मस्त बना देनेवाली हवाओं के बीच।

हम उस चट्टान के पास बैठें, जहां बनफ़शे के फूल छिपे हैं,
हम उनके चुम्बनों की मधुरता के
आदान-प्रदान का अनुकरण करें।

ग्रीष्म

मेरे प्रिय, हम खेतों में चलें, क्योंकि कटाई का समय निकट
आ रहा है, और सूर्य के नेत्र धान को पका रहे हैं।
हम पृथिवी की उपज की रखवाली करें, जिस प्रकार
आत्मा हमारे हृदय की गहराई में बोये हुए,
प्रेम के बीज से उत्पन्न हर्ष के धान का पोषण करती है।
हम प्रकृति की उपज से अपनी खत्तियां भरें, जिस प्रकार
जीवन-उदारता से हमारे हृदय-प्रदेश को
अपनी असीम कृपा से भरती है।
हम फूलों को अपना बिछौना बनायें, और
आकाश को अपना उढ़ौना, और दोनों अपने सिरों को साथ-साथ
नरम घास के तकिये पर विश्राम दें।
हम आराम करें दिन भर की मेहनत के बाद, और सुनें
निर्झर के प्रेरणादायक कलकल को।

शरद

हम चलें और द्राक्ष-कुंजों से अंगूर जमा करें;
द्राक्ष-कोल्हू के लिए, और पुराने पात्रों में
शराब रखें, जिस प्रकार आत्मा युगों के ज्ञान को
अनन्त काल के पात्रों में रखती है।

हम अपने निवास को लौट चलें, क्योंकि हवा ने
पीले पत्तों को गिरा दिया है और ढंक लिया है
मुरझाते हुए फूलों को, जो ग्रीष्म को चुपके-चुपके
मृत्यु-गीत सुनाते हैं।
घर चलो, मेरे चिर-प्रिय, क्योंकि चिड़ियों ने
गर्म स्थानों की ओर यात्रा कर दी है और छोड़ दिया है
घास के ठिठुरे हुए मैदान को, जो निर्जनता की पीड़ा
सहन कर रहे हैं।
चमेली और मेंहदी अब अश्रु-रहित हैं।
हम लौट चलें, क्योंकि थके हुए निर्झर ने
अपना गीत बन्द कर दिया है, और उफनते हुए स्रोत अपने-
अपने प्रचुर रुदन से सूख चुके हैं, और सचेत वृद्ध पहाड़ियों ने
अपने भड़कीले वस्त्र उठाकर रख दिये हैं।

आओ, मेरे प्रिय, प्रकृति स्वाभाविकतया थक गई है
और अपने उत्साह से विदा ले रही है,
शान्ति और सन्तोष के स्वर में।

शिशिर

मेरे निकट आओ, ओ मेरे परिपूर्ण जीवन के साथी !
मेरे निकट आओ और शिशिर के स्पर्श को
हमारे बीच में मत आने दो। अलाव के सामने मेरे पास बैठो,
क्योंकि अग्नि ही शिशिर की एकमात्र देन है।

मुझसे अपने हृदय की गरिमा की बातें करो, क्योंकि
वह हमारे दरवाजे के बाहर अट्टहास करते हुए
तत्त्वों से महान है।
दरवाजे और झरोखे वन्द कर दो, क्योंकि
आकाश-मण्डल की क्रोधपूर्ण मुद्रा मेरी आत्मा को
खिन्न करती है, और हमारे हिमाच्छादित खेतों का दृश्य
मेरे प्राणों को रुलाता है।

दीपक में तेल डालो और उसे मंद न होने दो, और
उसे अपने निकट रखो, ताकि आंसुओं से पढ़ सकूं, जो कुछ
मेरे साथ बंधे तुम्हारे जीवन ने तुम्हारे मुख पर लिखा है।
शरद मदिरा लाओ। हम पियें और गायें
वसन्त की चिन्ता-रहित बुआई की
और ग्रीष्म की सचेत चौकसी की
और शरद् की कटाई-रूपी पुरस्कार की
स्मृति के गीत।

मेरे निकट आओ, ओ मेरे प्राणों के प्रिय !
आग ठंडी हो रही है और राख के नीचे ठंडी हो रही है।
मेरा आलिंगन करो, क्योंकि मैं सूनेपन से डरता हूं। दीपक
मंद है, और शराब, जो हमने निकाली थी, हमारी आंखों को
मूंद रही है। हम एक-दूसरे को देखें
उनके बन्द हो जाने से पहले।
अपनी बांहों में भरकर मेरा आलिंगन करो, तब
निद्रा को हमारी आत्माओं का अभिन्नसमान आलिंगन करने दो।
मेरा चुम्बन करो, मेरे प्रिय, क्योंकि
शिशिर ने सबकुछ चुरा लिया है
सिवा हमारे हिलते होठों के।

तुम मेरे निकट हो, मेरे चिरन्तन !
उषाकाल कितना अल्प था, और
निद्रा का महासागर कितना गहन और विस्तृत होगा !

: ५ :

वैभव का निवास

मेरे थके हुए हृदय ने मुझसे विदा ली और 'वैभव के निवास' की ओर चल दिया। जब वह उस पवित्र नगर में पहुंचा, जिसे आत्मा ने आशीर्वाद दिया था और जिसकी पूजा की थी, वह आश्चर्य करने लगा, क्योंकि वहां उसे वह नहीं मिला, जिसके वहां होने की उसने सदैव कल्पना की थी। नगर शक्ति, धन और प्रभुत्व से रहित था।

और मेरा हृदय 'प्रेम की पुत्री' से यह कहते हुए बोला :

"प्रिय, मुझे 'संतुष्टि' कहां मिलेगी ? मैंने सुना था कि वह तुम्हारा साथ करने के लिए यहां आई थी।"

और 'प्रेम की पुत्री' ने उत्तर दिया :

" 'संतुष्टि' अपना सन्देश सुनाने नगर में चली भी गई है, जहां लालच और बुराइयां सार्वभौम हैं। हमें उसकी आवश्यकता नहीं है।"

'वैभव' 'संतुष्टि' की आकांक्षा नहीं करता, क्योंकि वह एक सांसारिक आशा है, और उसकी इच्छाएं द्रव्यों से संयोग के पाश में आबद्ध हैं, जबकि 'संतुष्टि' और कुछ नहीं, केवल

हृदय की अनुभूति है ।

सनातन आत्मा कभी संतुष्ट नहीं होती । वह सदैव उन्नति के लिए प्रयत्नशील है । तब मेरे हृदय ने 'सौंदर्य के जीवन' की ओर देखा और कहा :

"तुम पूर्णज्ञान हो । नारी के रहस्य के विषय में मुझे बतलाओ ।"

और उसने उत्तर दिया :

"ओ मानव-हृदय, नारी तुम्हारा अपना प्रतिबिम्ब है, और जो कुछ तुम हो, वह है; जहां कहीं तुम रहते हो, वह रहती है । वह धर्म के समान है, यदि उसकी व्याख्या अज्ञानी के द्वारा न की गई हो, और चांद के समान यदि उसे बादलों ने ढंक न लिया हो; और मन्द समीर के समान है, यदि उसे अशुद्धताओं ने विषाक्त न कर दिया हो ।"

और मेरा हृदय 'प्रेम' और 'सौन्दर्य की पुत्री 'ज्ञान' की ओर बढ़ा और बोला :

"मुझे बुद्धि का दान दो कि मैं लोगों के साथ उसका साझा कर सकूं ।"

और उसने उत्तर दिया :

"बुद्धि मत कहो, बल्कि वैभव, क्योंकि वास्तविक वैभव बाहर से नहीं आता, वरन् जीवन के पुण्यों की पवित्रता में प्रारम्भ होता है । लोगों के साथ अपने-आपका साझा करो ।"

: ६ :

लहर का गीत

सुदृढ़ तट मेरा प्रियमत है
और मैं हूं उसकी प्रियतमा।
हम अन्त में प्रेम द्वारा मिल गए हैं, और
तब चन्द्रमा मुझे उससे दूर अपनी ओर खींचता है।
मैं उतावली में उसके पास जाती हूं और लौटती हूं
भारी मन से, कई बार
संक्षिप्त विदाएं ले-लेकर।

मैं दबे-दबे नील क्षितिज के पीछे से
शीघ्रता से निकल आती हूं, अपने झाग की चांदी
उसकी रेत के स्वर्ण पर बिखेरने और
हम मिल जाते हैं,
द्रवीभूत दीप्ति में।

मैं उसकी प्यास बुझाती हूं और डूबाती हूं उसके
हृदय को; वह मेरे शब्द को कोमल करता है और
मेरे उद्वेग को शान्त।
सुबह में उसके कानों को प्रीत की रीत सुनाती हूं,
और वह मुझे उत्कण्ठा से अंक में भरता है।

संध्या-समय मैं उसे आशा का गीत सुनाती हूं,
और फिर उसके मुख पर कोमल चुम्बनों की छाप
लगाती हूं, मैं चंचल और भीरु हूं, परन्तु वह
शांत, सहनशील और विचारशील है। उसका
विशाल वक्ष:स्थल मेरी बेचैनी को शान्त करता है।

जब ज्वार आता है, हम एक-दूसरे का आलिंगन करते हैं,
जब वह लौट जाता है, मैं उसके चरणों में गिरकर
प्रार्थना करती हूं।

कितनी ही बार मैं मत्स्यांगनाओं के चारों ओर नाची हूं
जब उन्होंने गहराई से निकलकर
मेरे ऊपर विश्राम लिया है
नक्षत्रों को देखने के लिए;
कितनी ही बार मैंने प्रेमियों को अपने अभाव पर
असंतोष प्रकट करते सुना है, और मैंने
उनको 'आह' करने में सहायता की है।

कितनी ही बार मैंने विशालकाय चट्टानों से छेड़छाड़ की है,
और एक मुस्कान से उनको दुलराया है, परन्तु कभी
मैंने उनसे हास नहीं पाया;
कितनी ही बार मैंने डूबती हुई आत्माओं को उठाया है,
और बड़ी कोमलता से उन्हें अपने प्रियतम
तट के पास ले गई हूं। वह उन्हें

शक्ति प्रदान करता है और मेरी शक्ति
क्षीण करता है।
कितनी ही बार मैंने गहराइयों से रत्न चुराये हैं
और उन्हें अपने प्रियतम तट को भेंट किया है।
वह चुपचाप स्वीकार करता है, मैं परन्तु फिर भी
देती हूं, क्योंकि वह मेरा सदैव स्वागत करता है।

रात्रि की गहनता में, जब सारे
प्राणी निद्रादेवी की शरण लेते हैं, मैं
बैठी रहती हूं, कभी गाते हुए और कभी
उच्छ्वास छोड़ते हुए।
मैं सदैव जागती रहती हूं।

आह ! अनिद्रा ने मुझे निर्बल कर दिया है,
परन्तु मैं प्रेम करनेवाली हूं, और
प्रेम की सत्यता शक्तिशाली है।
थक जाऊं, परन्तु मैं मरूंगी कभी नहीं।

: ७ :

कवि की मृत्यु

रात्रि के अंधियारे पंखों ने नगर को ढक लिया, जिसपर प्रकृति ने बर्फ की निर्मल और श्वेत चांदनी फैला दी थी, और लोग अपने घरों में गर्मी पाने के लिए गलियां सूनी कर गये, जब कि उत्तरीय हवा उपवनों को उजाड़ देने के विचार से कोना-कोना छान रही थी।

नगर की बाहरी बस्ती में बर्फ के भार से बुरी तरह दबी एक पुरानी झोंपड़ी थी और अब-तब गिरनेवाली थी। उस झोंपड़ी के एक अंधेरे कोने में एक फटा-पुराना बिस्तर था, जिस पर एक मरणासन्न युवक पड़ा हुआ था—टकटकी बांधकर अपने दिये की मद्धिम लौ की ओर देखते हुए, जो प्रवेश करनेवाली हवाओं के कारण कांप रही थी। वह युवक जीवन के वसन्त में था, जिसने पूर्णतया समझ लिया था कि अपने-आपको जीवन के पंजों से स्वतन्त्र करने की शांतिमय घड़ी जल्दी-जल्दी निकट आ रही है। वह मृत्यु के आगमन की कृतज्ञतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था। उसके पीले चेहरे पर आशा की प्रभात-किरण प्रकट हुई और उसके ओठों पर एक दुखपूर्ण मुस्कराहट और उसकी आंखों में क्षमा।

वह एक कवि था, भूख से मरता हुआ, जीवित धनाढ्यों के नगर में। वह इस मृत्युलोक में भेजा गया था, मनुष्य के हृदय

को अपने सुन्दर और गहन वचनों से सजीव करने के लिए। वह एक श्रेष्ठ आत्मा थी, जो विवेक की देवी द्वारा मनुष्य की आत्मा को शान्ति देने और कोमल बनाने के लिए भेजी गई थी। लेकिन अफसोस ! उसने स्नेह-हीन संसार से उसके विचित्र निवासियों की एक मुस्कान पाये बिना ही हर्षपूर्वक विदा ले ली।

वह अपने अन्तिम श्वास ले रहा था और उसकी शैया के पास कोई भी नहीं था—सिवा दिये के, जो उसका एकमात्र साथी था, और कुछ कागजों के, जिनपर उसने अपने हृदय की अनुभूति को अंकित किया था। जैसे ही वह अपनी क्षीण होती हुई शक्ति के अवशेष को मुक्त करने लगा, त्योंही उसने अपने हाथों को आकाश की ओर उठाया, निराशा से अपनी आंखों को फिराया, मानो बादलों के अवगुंठन के पीछे से तारों को देखने के लिए छत को छेद देना चाह रहा हो।

और उसने कहा, "आओ, मनोहर मृत्यु ! मेरे प्राण तुम्हारी अभिलाषा कर रहे हैं। मेरे निकट आओ और जीवन की शृंखलाओं को काट दो, क्योंकि मैं उन्हें खींचते-खींचते थक गया हूं। आओ, मधुर मृत्यु ! और मुझे मेरे पड़ोसियों से छुटकारा दो, जो मुझे परदेसी समझते थे, क्योंकि मैं उन्हें देव-दूतों की भाषा समझाता हूं। जल्दी करो, आर्य शांतिपूर्ण मृत्यु ! और मुझे इस असंख्य लोगों से दूर ले चलो, जिन्होंने मुझे विस्मृति के अंधेरे कोने में डाल दिया, क्योंकि मैं उनकी तरह दुर्बलों का खून नहीं चूसता। आओ, सुकोमल मृत्यु ! और मुझे अपने श्वेत पंखों में समेट लो, क्योंकि मेरे साथी मनुष्यों को मेरी आव-श्यकता नहीं है। मेरा आलिंगन करो, प्रेम और दया से पूर्ण

आर्य मृत्यु ! अपने ओठों को मेरे ओठ छूने दो, जिन्होंने कभी मां के चुम्बन का रसास्वादन नहीं किया, न बहनों के गालों का स्पर्श किया, न प्रेमिका की अंगुलियों का लाड़ किया। आओ और मुझे ले चलो, मेरी प्रियतमा मृत्यु।''

तब मरणासन्न कवि की शैया के पास एक अप्सरा प्रकट हुई, जिसके पास अलौकिक और दैवीय सुन्दरता थी, अपने हाथ में कुमुदिनी की माला लिये हुए।

उसने उसका आलिंगन किया और उसकी आंखें बन्द कर दीं कि वह अपने आत्म-चक्षु की सहायता के अतिरिक्त न देख सके।

उसने उसके ओठों पर एक गहरे और दीर्घ चुम्बन की छाप लगाकर अपने ओठों को अलग किया, जिससे उसके ओठों पर सफलता की एक अमर मुस्कान बन गई।

तब वह कुटिया खाली हो गई और वहां कुछ शेष न रहा, सिवाय कागजों के, जिन्हें कवि ने कटु असफलता के कारण बिखरा दिया था।

सैकड़ों वर्षों के बाद, जब लोग अज्ञान की रुग्ण निद्रा से जागे और उन्होंने ज्ञान का प्रभात देखा, उन्होंने नगर के सुन्दरतम उपवन में उस कवि के सम्मान में, जिसकी कृतियों ने उन्हें स्वतन्त्र किया था, एक स्मारक खड़ा किया और प्रति वर्ष एक उत्सव मनाने का आयोजन किया। ओह ! मानव का अज्ञान कितना क्रूर है !

: ८ :

शान्ति

वृक्षों की शाखाओं को झुकाने और खेत में धान को रौंद देने के बाद तूफान शांत हो गया। तारे तड़ित के भग्न अवशेषों के समान प्रकट तो हुए, परन्तु अब सब पर निस्तब्धता का साम्राज्य था, जैसे प्रकृति का युद्ध कभी लड़ा ही नहीं गया हो।

उस घड़ी एक नवयुवती अपने कमरे में प्रविष्ट हुई और सिसकियां भरकर रोते हुए अपने बिस्तर के पास घुटने टेककर बैठ गई। उसका हृदय असहनीय पीड़ा से झुलस रहा था, परन्तु अंत में वह अपने ओंठ खोलकर कह सकी :

"हे प्रभु ! उसे कुशलता से मेरे घर ले आओ। मैंने अपने आंसू समाप्त कर दिये हैं और मैं अब और अधिक भेंट नहीं कर सकती। प्रेम और दया से परिपूर्ण, हे प्रभु ! मेरा धैर्य समाप्त हो गया है और दुख मेरे हृदय पर अधिकार कर रहा है। प्रभु ! उसे युद्ध के लौह-पंजों से मुक्त करो; उसे ऐसी निर्दय मृत्यु से बचाओ, क्योंकि वह दुर्बल है, सबल द्वारा शासित। हे स्वामी ! मेरे प्रिय की रक्षा करो, जो तुम्हारा अपना पुत्र है, उस शत्रु से जो तुम्हारा शत्रु है। मृत्यु-द्वार की ओर जबरदस्ती ले जानेवाले मार्ग से उसे अलग करो; उसे मुझसे मिलने दो, या आओ और मुझे उसके पास ले चलो।"

एक नवयुवक चुपचाप प्रविष्ट हुआ। मुक्त होते हुए जीवन

से भीगी हुई पट्टी से उसका सिर लिपटा हुआ था।

आंसू और हास द्वारा अभिवादन करता हुआ वह उसके निकट आया, फिर उसने उसका हाथ पकड़ा और उसपर अपने जलते हुए ओठ रख दिये। और उस वाणी से, जिसमें अतीत शोक, मिलन का आनन्द और उसकी प्रतिक्रिया की अनिश्चितता की झलक थी, वह बोला :

मुझसे डरो मत, क्योंकि मैं वही हूं, जिसके लिए तुमने प्रार्थना की थी। प्रसन्न हो, क्योंकि शान्ति मुझे तुम्हारे पास कुशलतापूर्वक लौटा लाई है और मानवता ने उसे पुनर्स्थापित कर दिया है, ज़िसे लालच ने हमसे छीन लेने का प्रयत्न किया था। उदास मत हो, बल्कि मुस्कराओ मेरी प्रियतमे ! आश्चर्य मत प्रकट करो, क्योंकि प्रेम में वह शक्ति है, जो मृत्यु को भगा देती है; वह जादू है, जो शत्रु को जीत लेता है। मैं तुम्हारा ही हूं। मुझे मृत्यु के नगर से निकलकर तुम्हारे सौन्दर्य के आवास को आनेवाली प्रेतात्मा मत समझो।

"भयभीत मत हो, क्योंकि मैं अब सत्य हूं, गोलियों और तलवारों से बचा हुआ—लोगों के समक्ष युद्ध पर प्रेम की विजय प्रकट करने के लिए। मैं शब्द हूं, सुख और शान्ति के खेल का परिचय देनेवाला।"

फिर नवयुवक चुप हो गया और उसके आंसू हृदय की भाषा बोले और आनन्द के स्वर्ण-दूत उस घर के चारों ओर मंडराने लगे और दो हृदयों ने उस एकता को फिर से पा लिया, जो उनसे छीन ली गई थी।

उषाकाल में दोनों तूफान से आहत प्रकृति के सौन्दर्य को

निहारते हुए खेत के बीच में खड़े हो गये। गहरी और सुखदायक निस्तब्धता के बाद सैनिक ने पूर्व दिशा की ओर देखा और अपनी प्रियतमा से कहा, "सूर्य को जन्म देती हुई अंधियारी की ओर देखो।"

: ६ :

अपराधी

तगड़े शरीरवाला, परन्तु भूख से अशक्त, एक नवयुवक सभी आने-जानेवालों के सामने हाथ फैलाकर भीख मांगते हुए और जीवन में अपनी हार का दुख-भरा गीत दुहराते हुए, भूख और अपमान की पीड़ा सहन करते हुए, सड़क की पटरी पर बैठा था।

जब रात पड़ी, उसके ओठ और जीभ सूखे हुए थे, जबकि उसके हाथ उतने ही खाली थे, जितना कि उसका पेट।

उसने अपने-आपको उठाया और नगर से बाहर गया, जहां वह एक वृक्ष के नीचे बैठ गया और फूट-फूटकर रोया। तब उसने अपनी व्याकुल आंखों को आकाश की ओर उठाया, जबकि भूख उसे अंदर-ही-अंदर खाये जा रही थी, और उसने कहा, "हे स्वामी! मैं धनवान के पास गया और मैंने नौकरी के लिए प्रार्थना की, लेकिन उसने मेरी मलिनता के कारण मुंह फेर लिया; मैंने विद्वानों का द्वार खटखटाया, परन्तु मुझे ढाढ़स नहीं दिया गया, क्योंकि मेरे हाथ खाली थे; मैंने कोई भी काम, जिससे मुझे रोटी मिले, तलाश किया, लेकिन व्यर्थ। निराश होकर मैंने भीख मांगी, परन्तु तेरे पुजारियों ने मुझे देखा और कहा, 'यह तो तगड़ा है और चुस्त, और इसे भीख नहीं मांगनी चाहिए।'

"हे स्वामी! तेरी इच्छा से मेरी माता ने मुझे जन्म दिया, अब धरती अन्त के पहले ही मुझे तेरी भेंट कर रही है।"

उसकी मुद्रा तब बदल गई। वह उठा और उसकी आंखें अब दृढ़-निश्चय से चमक रही थीं। उसने वृक्ष की शाखा से एक मोटा और भारी डण्डा बनाया, और उसे नगर की ओर उठाया यह चिल्लाते हुए, "मैंने अपनी वाणी की समस्त शक्ति से रोटी मांगी और मुझे इन्कार कर दिया गया। अब मैं उसे अपनी शारीरिक शक्ति से प्राप्त करूंगा। मैंने दया और प्रेम के नाम पर रोटी मांगी, किन्तु मनुष्य ने ध्यान नहीं दिया। मैं उसे अब पाप के नाम पर प्राप्त करूंगा!"

बीतते हुए वर्षों ने उस नवयुवक को एक डाकू बना दिया, हत्यारा, और आत्माओं का हनन करनेवाला; उसने उन सब को कुचला, जिन्होंने उसका सामना किया; उसने कल्पनातीत दौलत इकट्ठी की, जिससे वह उनका कृपापात्र बन गया, जिनके हाथों में सत्ता थी। साथी उसकी प्रशंसा करते थे, दूसरे लुटेरे उससे ईर्ष्या करते थे और जन-समूह उससे डरते थे।

उसके वैभव और झूठी प्रतिष्ठा से प्रभावित होकर अमीर ने नगर में उसे अपना उप-प्रधान नियुक्त किया—बुद्धिहीन शासकों की प्रचलित शोकपूर्ण परिपाटी। चोरियां तब न्याय-संगत मानी गईं; अधिकारी अत्याचार का पक्ष लेते थे, दुर्बलों को पीड़ित करना नित्यप्रति की बात हो गई, जनता खुशामद और प्रशंसा करती थी।

इस प्रकार मनुष्य की स्वार्थपरता का प्रथम स्पर्श दीनों को अपराधी बनाता है, और शान्ति के पुत्रों को हत्यारा बनाता है। इस प्रकार मनुष्य की आदि-लोलुपता प्रौढ़ होती है और उलटकर हजार गुना शक्ति से मानवता पर हमला करती है।

जीवन का क्रीड़ा-स्थल

सौन्दर्य और प्रेम के अनुसरण में व्यतीत गई
एक घड़ी का मूल्य दुर्बलों द्वारा शक्तिशालियों को
प्रदान किये गए गौरव की एक शताब्दी के बराबर है।

मानव का सत्य उस घड़ी से प्रादुर्भूत होता है; और
उस शताब्दी में सत्य सोता है,
व्याकुल कर देनेवाले सपनों की बेचैन भुजाओं में।

उस घड़ी में आत्मा स्वयं देखती है
प्राकृतिक नियम को, और उस शताब्दी में वह
मनुष्य-निर्मित नियमों में अपने-आपको बन्दी कर लेती है;
और वह अत्याचार की बेड़ियों में जकड़ी रहती है।

वह घड़ी सोलोमन के गीतों की प्रेरणा थी,
और वह शताब्दी वह अन्ध-शक्ति थी, जिसने
बालबेक के मन्दिर का विनाश किया।

वह घड़ी गिरि-प्रवचन की उत्पत्ति थी,
और उस शताब्दी ने पाल्मीरा के प्रासादों और

बेबीलोनिया की मीनार का विध्वंस किया।

वह घड़ी मोहम्मद का हिज्र थी, और वह
शताब्दी अल्लाह, गोलगोथा और सिनाई को भूल गई।

दुर्बलों की छीन ली गई समानता पर आंसू बहाने और
शोक प्रकट करने में व्यतीत की गई एक घड़ी लालच
और अपहरण से परिपूर्ण एक शताब्दी से श्रेष्ठ है।

यह वह घड़ी है, जबकि हृदय
सन्ताप की ज्वाला द्वारा पवित्र होता है, और
प्रेम की मशाल द्वारा प्रकाशित।
और इस शताब्दी में, सत्य-प्राप्ति की आकांक्षाएं
पृथिवी के गर्भ में दफन होती हैं।
वह घड़ी वह मूल है, जो अवश्य फलती-फूलती है।
वह घड़ी चिन्तन की घड़ी है,
ध्यान की घड़ी है, प्रार्थना की घड़ी है,
और कल्याण के नवयुग की घड़ी है।
और वह शताब्दी नीरो का एक जीवन है
जो अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए
सांसारिक वैभव के उपयोग में व्यतीत किया गया है।

यह जीवन है।
युगों से रंगमंच पर अभिनीत;

शताब्दियों से सांसारिकता द्वारा उल्लिखित;
वर्षों से अपरिचित अवस्था में स्थित;
दिनों से स्मृतियों के समान पठित;
केवल घड़ी भर के लिए परमपद को प्राप्त,
किन्तु यह घड़ी अनन्त के लिए रत्न के समान अमूल्य है ।

: ११ :

श्री का गीत

मनुष्य और मैं प्रमी-प्रेमिका हैं।
वह मेरी अभिलाषा करता है और मैं उसकी चाहना करती हूं,
परन्तु शोक ! हमारे बीच में आ गई है
एक प्रतिस्पर्द्धिनी,
जो हमें कष्ट पहुंचाती है।
वह निर्दय और शोषक है,
उसके पास है केवल मिथ्या आकर्षण।
उसका नाम है लक्ष्मी।
जहां कहीं हम जाते हैं, वह पीछा करती है
और एक पहरेदार की तरह हम पर आंख रखती है,
और मेरे प्रेमी को बेचैन बनाती है।

मैं अपने प्रियतम को ढूंढ़ती हूं जंगल में,
पेड़ों के नीचे, झीलों के पास।
मैं उसे प्राप्त नहीं कर सकती, क्योंकि लक्ष्मी
उसे कोलाहल-पूर्ण नगर की ओर उड़ा ले गई है
जहां उसने उसे सोने-चांदी के
जगमगाते सिंहासन पर बिठा दिया है।

मैं ज्ञान की वाणी और विवेक के गीत
द्वारा उसे बुलाती हूं।
वह सुन नहीं पाता, क्योंकि लक्ष्मी
उसे लुभाकर स्वार्थपरता की कोठरी में
ले गई है, जहां लालसा का निवास है।

मैं उसे सन्तोष की भूमि में खोजती हूं,
परन्तु मैं अकेली ही हूं, क्योंकि मेरी सौत ने
उसे लालच और लोलुपता की गुफा में
बन्दी कर लिया है, और वहां उसे सोने की
दुःखदाई जंजीरों से बांध रखा है।

मैं उसे उषाकाल में पुकारती हूं, जब
प्रकृति मुस्कराती है,
लेकिन वह सुनता नहीं, क्योंकि अतुलता ने
उसकी मदमाती आंखों पर
अस्वस्थ निद्रा का भार डाल दिया है।

मैं उसे संध्या समय फुसलाती हूं, जबकि शांति का साम्राज्य
होता है और फूल सोते हैं। परन्तु वह उत्तर नहीं देता,
क्योंकि उसकी आशंका कि कल क्या होगा,
उसके विचारों पर काली छाया डाल देती है।

वह मुझसे प्रेम करने के लिए उत्सुक है;

वह अपने सांसारिक कार्यों में मेरी इच्छा करता है,
परन्तु वह मुझे ईश्वर के कार्यों में ही पायेगा,
और कहीं नहीं।

वह मुझे अपने गौरव के महलों में ढूढ़ता है,
जो उसने औरों की हड्डियों पर बनाये हैं।
वह अपने सोने-चांदी के ढेरों में से
मुझे गुप्त सन्देश देता है;
परन्तु वह मुझे पायेगा सरलता
के निवास स्थान में आकर ही, जिसे परमात्मा ने
प्रेम के स्रोत के तट पर बनाया है।

वह अपने खजानों के सामने मेरा चुम्बन करना चाहता है,
परन्तु उसके ओठ मेरे ओठों को केवल पवित्र वायु की
सम्पन्नता में ही छू सकेंगे, और नहीं।

वह मुझसे अपने कल्पनातीत वैभव में भाग लेने की
प्रार्थना करता है, परन्तु मैं ईश्वर के वैभव का
त्याग नहीं करूंगी; मैं अपने सौन्दर्य के आवरण को
उतार नहीं फेंकूंगी।

वह हमारे बीच कपट को माध्यम बनाना चाहता है;
मैं केवल उसके हृदय को माध्यम बनाना चाहती हूं।
वह अपनी संकुचित कोठरी में अपने को घायल करता है,

मैं अपने प्रेम से उसके हृदय को समृद्धिशाली बनाऊंगी ।

मेरे प्रियतम ने मेरी शत्रु लक्ष्मी के लिए रोना और
चिल्लाना सीख लिया है, मैं उसे सिखाऊंगी
प्रत्येक वस्तु के लिए
अपनी आत्मा की आंखों से प्रेम और
दया के आंसू बहाना,
और उन आंसुओं के द्वारा
सन्तोष की सांस लेना ।

मनुष्य मेरा प्रेमिक है;
मैं उसकी हो जाना चाहती हूं ।

: १२ :

मुर्दों का नगर

कल मैंने अपने आपको जन-कोलाहल से अलग किया और मैदान में बढ़ता गया, यहां तक कि मैं एक पहाड़ी पर पहुंच गया, जिसपर प्रकृति ने अपने सुन्दर आवरण बिछाये थे। अब मैं सांस ले सकता था।

मैंने पीछे की ओर देखा और अति सुन्दर मस्जिदों और विशाल अट्टालिकाओंवाला नगर कारखानों के धुंए से ढका हुआ दिखाई दिया।

मैंने मनुष्य के उद्देश्य की परीक्षा करनी शुरू की, परन्तु इसी निष्कर्ष पर पहुंच पाया कि उसका अधिकांश जीवन संघर्ष और कठिनाइयों से अभिन्न है। तब मैंने प्रयत्न किया कि इन आदम की सन्तानों ने जो कुछ किया है, उसपर विचार न करूं और अपनी आंखों को मैंने मैदान पर केन्द्रित किया, जो ईश्वर की महानता का सिंहासन है। मैदान के एक सूने कोने में मैंने चिन्ता के वृक्षों से घिरा हुआ एक कब्रिस्तान देखा।

यहां, मुर्दों के नगर और जीवितों के नगर के बीच में, मैं चिंतन करने लगा। एक की अनन्त शान्ति और दूसरे के असीम दुख के बारे में मैं विचार करने लगा।

जीवितों के नगर में मैंने पाई आशा और निराशा, प्रेम और घृणा, सुख और दुख, समृद्धि और निर्धनता, श्रद्धा और अश्रद्धा।

मुर्दों के नगर में मिट्टी-मिट्टी में गड़ी है, जिसे प्रकृति रात्रि की निस्तब्धता में पहले हरियाली में, और तब जीवन में, और तब मनुष्य में परिवर्तित करती है। जब मेरा मस्तिष्क इस प्रकार विचरण कर रहा था, मैंने एक जुलूस को धीरे-धीरे और भक्ति-भाव से बढ़ते हुए देखा, जिसके साथ बाजे बज रहे थे, जिसने आकाश को उदास संगीत से भर दिया था। वह एक शानदार शव-यात्रा थी। मुर्दे के पीछे-पीछे जीवित चल रहे थे, जो उसकी विदा पर रो रहे थे और शोक प्रकट कर रहे थे। जब जुलूस दफनाने की जगह पहुंचा, तब पुजारियों ने प्रार्थना करना और धूप जलाना शुरू किया, और संगीतकारों ने मृत आत्मा के लिए रोते हुए अपने बाजों को बजाना प्रारम्भ किया। तब नेतागण एक-दूसरे के बाद आगे आये और उन्होंने सुन्दर चुने हुए शब्दों में उसकी प्रशंसा की।

अन्त में जन-समूह लौट गया, मुर्दे को पत्थर और लोहे की विशेष कारीगरी से निर्मित और बहुत ही मूल्यवान पुष्पहारों से ढंकी हुई एक विशाल और सुन्दर कब्र में विश्राम करते हुए छोड़कर।

विदा देनेवाले नगर को लौट गये और मैं उन्हें दूर से देखता हुआ और धीरे-धीरे अपने-आपसे बात करता हुआ ठहरा रहा, जबकि सूर्य क्षितिज की ओर उतर रहा था और प्रकृति सोने के लिए अनेक तैयारियां कर रही थी।

तब मैंने दो आदमियों को लकड़ी के एक बक्स के भार से दबे और उनके पीछे एक जर्जर-सी स्त्री को अपनी बांहों में एक बच्चे को लिए आते देखा। सबके पीछे एक कुत्ता आ रहा

था, जो हृदय-विदारक आंखों से पहले स्त्री की ओर और फिर बक्स देखता जाता था ।

वह एक साधारण शव-यात्रा थी । मृत्यु के इस मेहमान ने हृदयहीन समाज के हाथों में छोड़ा था एक दुखी पत्नी को और उसका दुख बंटाने के लिए एक बच्चे को, और एक स्वामि-भक्त कुत्ते को, जिसका हृदय अपने साथी के विदा हो जाने की बात को जानता था ।

जब वे दफनाने की जगह पहुंचे, उन्होंने बक्स को कुंजों और संगमरमर की कब्रों से दूर एक खाई में रख दिया और सीधे-सादे शब्दों में परमात्मा से प्रार्थना करके वे लौट गये । कुत्ते ने अन्तिम बार घूमकर अपने मित्र की कब्र की ओर देखा, जबकि वह छोटा-सा समूह वृक्षों के पीछे छिप गया ।

मैंने जीवितों के नगर की ओर देखा और अपने-आपसे कहा, "वह स्थान भी थोड़े-से लोगों का है । हे प्रभु ! सभी लोगों का विश्राम-स्थान कहां है ?"

जैसे ही मैंने कहा, मैंने सूर्य की लम्बी और सुन्दरतम् स्वर्णिम किरणों में मिले बादलों की ओर देखा । मैंने अपने अन्तर में एक वाणी को कहते हुए सुना, "वहां !"

: १३ :

वर्षा का गीत

मैं स्वर्ग से देवताओं द्वारा गिराई गई चांदी
को बिन्दु अंकित डोरियां हूं। प्रकृति तब मुझे अपने
मैदानों और घाटियों का शृंगार करने के लिए धारण करती है।

मैं इश्तर के ताज में से उद्यानों को सजाने के लिए
उषा की पुत्री द्वारा तोड़े हुए
सुन्दर मोती हूं।

जब मैं रोती हूं, पहाड़ियां हंसती हैं;
जब मैं नम्र होती हूं, पुष्प खुशियां मनाते हैं;
जब मैं नत होती हूं, सब वस्तुएं प्रफुल्लित होती हैं।

खेत और बादल प्रेमी है
और मैं उनके बीच दया की सन्देश-वाहिका हूं।
मैं एक की प्यास बुझाती हूं;
मैं दूसरे की पीड़ा हरती हूं।

गर्जन का शब्द मेरे आगमन की घोषणा करता है;
इन्द्रधनुष मेरी विदा की सूचना देता है।

मैं सांसारिक जीवन के समान हूं, जो भ्रान्त तत्वों
के चरणों से प्रारम्भ होता है और मृत्यु के
फैले हुए पंखों के नीचे समाप्त होता है।

मैं सागर के हृदय से निकलती हूं और
हवा के साथ ऊंची उठती हूं। जब मैं किसी खेत
को आवश्यकता में देखती हूं, मैं नीचे उतरती हूं और
पुष्पों और वृक्षों का लाखों प्रकार से आलिंगन करती हूं।

मैं अपनी कोमल अंगुलियों से झरोखों को धीरे से
छूती हूं, मेरे आगमन की घोषणा
एक सुखद गीत है। उसे सभी सुन सकते हैं, परन्तु
समझ केवल भावुक-हृदय ही सकते हैं।

वायु की गर्मी मुझे जन्म देती है,
लेकिन बदले में मैं उसका विनाश करती हूं,
जिस प्रकार नारी पुरुष को उस शक्ति से
पराजित करती है, जो वह उससे प्राप्त करती है।

● ● ●

मैं समुद्र का उच्छ्वास हूं;
खेत का हास हूं;
आकाश के आंसू हूं।

इसी प्रकार प्रेम में—
अनुराग के गहरे समुद्र से उच्छ्वास;
आत्मा के अनुरंजित खेत से हास;
स्मृतियों के अनन्त आकाश से आंसू ।

: १४ :

विधवा और उसका पुत्र

उत्तरी लेबनान में रात हो गई थी और बर्फ उन गांवों को ढंक रही थी, जो कदीशा घाटी से घिरे हुए थे, जिससे खेत और चरागाह एक बहुत बड़े ताड़-पत्र के समान प्रतीत हो रहे थे, जिस पर उत्तेजित प्रकृति अपने अनेक कारनामों का आलेखन कर रही थी। जब रात्रि निस्तब्धता में डूब रही थी, पुरुष गलियों से अपने घर आये।

उन गांवों के पास एक अकेले घर में एक औरत रहती थी, जो अंगीठी के पास बैठी ऊन कात रही थी और उसके पास उसका इकलौता बच्चा बैठा था, जो कभी आग की ओर देखता था और कभी मां की ओर।

गर्जन के दुर्घर्ष घोष ने मकान को हिला दिया और छोटा बच्चा भयभीत हो गया। उसने अपनी बांहें अपनी मां के गले में डाल दीं, उसकी ममता द्वारा प्रकृति के क्रोध से बचने के लिए। उसने उसे अपनी छाती से लगाया और उसका चुम्बन किया; फिर उसने उसे अपनी गोद में बिठाया और कहा :

"डरो मत, मेरे बच्चे, क्योंकि प्रकृति अपनी अतुल शक्ति को मनुष्य की दुर्बलता से केवल तोल रही है। गिरते हुए बर्फ और घने बादलों और तेज हवाओं के परे एक परम नियन्ता है, और वह पृथ्वी की आवश्यकताओं को जानता है, क्योंकि उसने

उसे बनाया है; और वह दुर्बलों को दयापूर्ण दृष्टि से देखता है।

"साहस रखो, मेरे बच्चे। प्रकृति वसन्त में मुस्काती है और ग्रीष्म में हंसती है और पतझड़ में जमुहाई लेती है, परन्तु अभी वह रो रही है; और अपने आंसुओं से वह सिंचन करती है जीवन का, जो पृथ्वी के नीचे छिपा है!

"सो जाओ, मेरे प्यारे बच्चे; तुम्हारा पिता हमें स्वर्ग से देख रहा है। बर्फ और गर्जन इस बेला में हमें उसके सन्निकट ले जाते हैं।

"सोओ, मेरे प्रिय, क्योंकि यह श्वेत आवरण, जो हमें शीतल करता है, बीजों को गर्म रखता है, और यह संघर्ष-मय अवस्था सुन्दर पुष्प उत्पन्न करेगी, जबकि निसान आयेगा।

"इसी प्रकार, मेरे बच्चे, मनुष्य प्रेम प्राप्त नहीं कर सकता— दुखदायी और सत्य को प्रत्यक्ष करनेवाले वियोग और कटुता-पूर्ण धैर्य और असहनीय कठिनाइयों को पार किये बिना। सोओ, मेरे छोटे बच्चे; मधुर स्वप्न खोज पायेंगे तुम्हारी आत्मा को, जो रात्रि की विकट अंधियारीऔर तीक्षण शीत से अभय है।"

छोटे बच्चे ने उनींदी आंखों से अपनी मां को देखा और कहा, "मां, मेरी आंखें भारी हैं, परन्तु प्रार्थना किये बिना मैं सो नहीं सकता।"

स्त्री ने गीली आंखों की धुंधली दृष्टि से उसके दैवीय मुख को देखा, और कहा :

"मेरे साथ दोहरा, मेरे बेटे—परमेश्वर! गरीबों पर दया कर और शीत से उनकी रक्षा कर; उनके अध-ढके शरीरों को अपने दयापूर्ण हाथों से गर्म कर; भूख और शीत से पीड़ित,

दीन-हीन घरों में सो रहे अनाथ बालकों की ओर देख । हे ईश्वर ! उन विधवाओं की पुकार सुन, जो असहाय हैं और अपने बच्चों के लिए भय से प्रकम्पित हैं । ओ मालिक ! मानव का हृदय प्रस्फुटित कर कि वह दुर्बल की पीड़ा को देख सके । दुखियों पर दया कर, जो दरवाजे खटखटा रहे हैं, और मुसाफिरों को ऊष्ण स्थानों की ओर ले चल । हे प्रभु ! छोटी चिड़ियों का ध्यान रख और बृक्षों और खेतों की तूफान के क्रोध से रक्षा कर; क्योंकि तू दयामय है और प्रेम से परिपूर्ण है ।"

जब निद्रा ने बालक की आत्मा को बन्दी कर लिया, उसकी मां ने उसे बिछौने पर सुला दिया और उसकी आंखों को कांपते हुए ओठों से चूमा । फिर वह लौटकर अंगीठी के पास बैठ गई और उसके लिए कपड़ा बनाने को ऊन कातने लगी ।

: १५ :

कवि

वह वर्तमान और भावी जगत के बीच एक कड़ी है।
वह है एक पवित्र स्रोत,
जिसमें से सारी प्यासी आत्माएं पान कर सकती हैं।

वह एक बृक्ष है, जिसका सिंचन सौन्दर्य की नदी करती है,
जिसपर वह फल लगता है, जिसकी क्षुधित हृदय
याचना करता है;
वह कोयल है, जो अपने सुन्दर रागों से खिन्न
आत्मा को शान्ति प्रदान करती है;
वह एक श्वेत बादल है, जो क्षितिज पर दिखाई देता है,
ऊंचा उठता हुआ और बढ़ता हुआ—जबतक कि वह आकाश के
मुख को ढंक नहीं लेता।
तब वह जीवन-भूमि में फूलों पर गिरता है—
प्रकाश का प्रवेश कराने के लिए उनकी पंखुड़ियों को विकसित
करता हुआ।

वह देवदूत है, जिसे देवी ने
देवता का सन्देश सुनाने भेजा है,
वह जाज्वल्यमान दीपक है, जो अन्धकार द्वारा

जीता नहीं गया है
और हवा द्वारा बुझाया नहीं जा सकता।
प्रेम के इत्तर द्वारा वह स्नेह-सिक्त किया जाता है,
और संगीत के अपोलन द्वारा प्रज्वलित।

वह एकाकी व्यक्ति है, सादगी और दया से आवरित;
वह प्रकृति की गोद में प्रेरणा पाने के लिए बैठता है
और रात्रि की निस्तब्धता में जागता है,
आत्मा के अवतरण की प्रतीक्षा करता हुआ।

वह खेतिहर है, जो अपने हृदय के बीज प्रेम के खेत में
बोता है, और उसकी फसल मानवता
अपने पोषण के लिए काटती है।

यह है कवि, जिसकी लोग इस जीवन में उपेक्षा करते हैं,
और उसकी पहचान तभी होती है, जब वह नश्वर जग से
विदा लेकर स्वर्ग में अपने लता-कुंज को लौट जाता है।
यह है कवि, जो मानवता से एक मुस्कान के अतिरिक्त
कुछ नहीं मांगता।

यह है कवि, जिसके प्राण ऊपर उठते हैं,
और आकाश को सुन्दर शब्दों से भर देते हैं;
फिर भी लोग अपने-आपको उसके प्रकाश से वंचित रखते हैं।

आखिर लोग कबतक सोते रहेंगे ?
आखिर वे कबतक उनको गौरव प्रदान करते रहेंगे,
जिन्होंने लाभ के कुछ क्षणों द्वारा महत्ता प्राप्त की है ?
कबतक वे उनकी उपेक्षा करते रहेंगे, जो उन्हें अपनी
आत्मा के सौन्दर्य को देख पाने के योग्य बनाते हैं,
जो शान्ति और प्रेम का प्रतीक है ?
आखिर कबतक मनुष्य मृतकों की पूजा करते रहेंगे,
उन जीवितों को भूलकर, जो पीड़ा में डूबे हुए
अपना जीवन बिताते हैं और प्रज्वलित दीपशिखाओं के समान
अपना जीवन समाप्त कर देते हैं, अज्ञानियों का मार्ग
प्रकाशित करने के लिए और
उन्हें प्रकाश के मार्ग पर चलाने के लिए ?

कवि, तुम इस जीवन के प्राण हो, और तुमने
समय की कठोरता के उपरान्त भी उस पर विजय प्राप्त की है।

कवि, तुम एक दिन हृदयों पर शासन करोगे, और
इसलिए, तुम्हारे साम्राज्य का अन्त नहीं है।
कवि, अपने कांटों के ताज की परीक्षा करो; तुम उसमें
यश के खिलते हुए फूलों का एक हार छिपा हुआ पाओगे।

: १६ :

आत्मा का गीत

मेरी आत्मा की गहराई में एक
शब्दहीन गीत है—एक गीत
जिसका मेरे हृदय के बीज में निवास है।
स्याही के साथ लेखन-पत्र पर उतरना वह
अस्वीकार करता है; मेरे स्नेह को वह एक पारदर्शक
आवरण में डुबा लेता है और बहता है,
परन्तु मेरे अधरों से नहीं।

मैं उसे उच्छ्वासों के द्वारा कैसे निकालूं? मैं डरता हूं कि
वह संसार के वायुमंडल में मिल जायेगा;
मैं उसे गाकर किसे सुनाऊं? वह मेरी
आत्मा के भवन में निवास करता है,
रूखे कानों से भयभीत।

जब मैं अपने अन्तर्चक्षुओं में देखता हूं,
मुझे उसकी छाया की प्रतिच्छाया दीख पड़ती है;
जब मैं अपनी अंगुलियों का स्पर्श करता हूं,
मुझे उसकी झंकारों का बोध होता है।

मेरे हाथों की चेष्टाओं को उसकी
उपस्थिति का भान होता है, जैसे झील
जगमगाते हुए तारों को प्रतिबिम्बित करती ही है; मेरे आंसू
उसे प्रकट करते हैं, जैसे ओस की निर्मल बूंदें
मुर्झाते हुए पुष्प के रहस्य को प्रकट करती हैं।

वह एक गीत है—चिन्तन द्वारा रचा हुआ,
और मौन द्वारा प्रकाशित किया हुआ,
और कोलाहल द्वारा त्यागा हुआ,
और सत्य द्वारा सजाया हुआ,
और सपनों द्वारा दोहराया हुआ-
और प्रेम द्वारा ग्रहण किया हुआ,
और जागरण द्वारा छिपाया हुआ,
और आत्मा द्वारा गाया हुआ,

वह प्रेम का गीत है,
कौनसे केन[१] और इसाऊ[२] इसे गा सकते हैं ?

वह चमेली से अधिक सुवासित है;
कौनसी वाणी इसे बन्दी कर सकती है ?
वह हृदय में सीमित है, कुँआरी कन्या के भेद के समान;
कौनसे तार इसे झंकृत कर सकते हैं ?

---

[१] [२] बाईबल में वर्णित चरित्र

सागर के गर्जन और कोयल के गान को
एक करने का साहस कौन कर सकता है ?
चीत्कार करते हुए अंधड़ की एक बच्चे के
निश्वास के साथ तुलना करने का साहस कौन कर सकता है ?
हृदय द्वारा ही बोले जायं, ऐसे शब्दों को
वाणी द्वारा प्रकट करने का साहस कौन कर सकता है ?
ईश्वर के गीत को
स्वरों में गाने का साहस कौन प्राणी कर सकता है ?

: १७ :

अट्टहास और आँसू

जिस समय सूर्य ने अपनी किरणें उद्यान से समेटीं और चन्द्रमा ने अपनी कोमल चन्द्रिका फूलों पर बिखराई, मैं वृक्षों के नीचे बैठा हुआ वायुमंडल की अद्भुतता पर विचार कर रहा था, शाखाओं के मध्य से बिखरे हुए तारों को देखते हुए, जो नील वितान पर रजत कणों के समान चमकते थे, और मैं दूर से सुन सकता था उस छोटी नदी के उत्तेजित कलकल को, जो गाती हुई शीघ्रता से घाटी में प्रवेश कर रही थी।

जब चिड़ियों ने डालियों में बसेरा लिया और फूलों ने अपनी पंखुड़ियां समेट लीं और चारों ओर घोर निस्तब्धता छा गई, मैंने घास में पैरों की आहट सुनी। मैंने ध्यान दिया और युवा प्रेमियों के एक जोड़े को अपने कुंज की ओर आते देखा। वे एक वृक्ष के नीचे बैठ गये, जहां मैं उन्हें बिना दिखाई दिये देख सकता था।

जब उस युवक ने अपने चारों ओर देख लिया, तो मैंने उसे कहते हुए सुना, "मेरे पास बैठो, मेरी प्रेयसि, और मेरे हृदय की वाणी सुनो। मुस्कराओ, क्योंकि तुम्हारा सुख हमारे भविष्य का प्रतीक है; खुशियां मनाओ, क्योंकि जगमगाते हुए दिन हमारे साथ आनन्द मना रहे हैं।

"मेरी आत्मा तुम्हारे हृदय के सन्देह की मुझे सूचना दे रही

है, क्योंकि प्रेम में सन्देह पाप है।

"शीघ्र ही तुम इस विस्तृत क्षेत्र की स्वामिनी बनोगी, जो इस सुन्दर चन्द्रमा द्वारा प्रकाशित है, शीघ्र ही तुम मेरे भवन की गृहिणी बनोगी और सारे दास और दासियां तुम्हारी आज्ञाओं का पालन करेंगे।

"मुस्कराओ, मेरी प्रियतमे, जिस प्रकार कि मेरे पिता के कोष का स्वर्ण मुस्कराता है।

"मेरा हृदय तुम्हें अपने भेद से वंचित रखने से इन्कार करता है। सुख और यात्रा के बारह मास हमारे सामने हैं, एक वर्ष तक हम मेरे पिता का धन स्विजरलैंड की नीली झीलों पर और मिस्र तथा इटली के भवनों को देखने में और लेबनान क पवित्र देवदारों के नीचे विश्राम करने में खर्च करेंगे; तुम राज-कुमारियों से भेंट करोगी, जो तुम्हारे आभूषणों और आभरणों के कारण तुमसे ईर्ष्या करेंगी।

"मैं यह सब तुम्हारे लिए करूंगा, क्या तुम सन्तुष्ट होगी?"

थोड़ी देर में मैंने उन्हें जाते हुए पुष्पों को रौंदते हुए देखा, जिस प्रकार धनवान निर्धनों के हृदय को कुचलते हैं। जैसे ही वे मेरी दृष्टि से ओझल हुए, मैं प्रेम और धन की तुलना करने लगा और अपने हृदय में उनकी स्थिति का विश्लेषण करने लगा।

धन ! छलमय प्रेम का उद्‌गम; मिथ्या प्रकाश और ऐश्वर्य का स्रोत, विषाक्त जल का कूप, वृद्धावस्था का नैराश्य !

अभी मैं चिन्तन की विशाल मरुभूमि में ही चक्कर काट रहा था कि निराश्रय और कंकाल-सदृश प्रेमियों का एक

जोड़ा मेरे पास से निकला और घास पर बैठ गया, एक युवक और एक नवयुवती, जो इस शीतल और एकान्त स्थान में आने के लिए अपने निकटवर्ती खेतों की झोपड़ियों से आये थे।

पूर्ण निस्तब्धता के कुछ क्षणों के पश्चात्, ऋतु-आहत ओठों से उच्छ्वासों के साथ निकले ये शब्द मैंने सुने, "आँसू न बहाओ, मेरी प्रेयसि, प्रेम जो हमारी आँखें खोलता है और हमारे हृदयों को बन्दी बनाता है, हमें धैर्य के आशीर्वाद दे सकता है। हमारे विलम्ब में शान्ति धारण करो, क्योंकि हमने एक सौगन्ध खाई है और प्रेम के मन्दिर में प्रवेश किया है क्योंकि हमारा प्रेम आपत्ति में निरन्तर बढ़ता रहेगा, क्योंकि यह प्रेम के नाम पर है कि हम निर्धनता के रोड़े और पीड़ा की तीक्ष्णता और वियोग की शून्यता सह रहे हैं। मैं इन कठिनाइयों से युद्ध करूंगा—जबतक मैं जीत न जाऊं और तुम्हारे हाथों में वह शक्ति न रख दूं, जो जीवन की यात्रा पूर्ण करने के लिए सारी आपत्तियों से पार पाने में सहायक होगी।

"प्रेम—जो ईश्वर है—हमारे उच्छ्वासों और आँसुओं को अपनी वेदी पर जलाई गई धूप के समान स्वीकार करेगा और वह हमें सहनशीलता का प्रसाद देगा। अलविदा, मेरी प्रियतमे ! उत्साहित करनेवाले चन्द्रमा के अस्त होने से पूर्व मुझे चल देना चाहिए।"

प्रेम की जलानेवाली शिखा और आकांक्षा की निराशा-पूर्ण कटुता और धैर्य की सुस्थिर माधुरी से मिश्रित एक पवित्र वाणी ने कहा, "अलविदा, मेरे प्रिय !"

वे विलग हुए और मेरे रोते हुए हृदय की चीत्कारों ने

उनके मिलन के मरसिये को दबा दिया।

मैंने अलसित प्रकृति की ओर देखा और गहरे चिन्तन से एक अनन्त और विस्तृत वस्तु की शोध की—एक ऐसी वस्तु—जिसे कोई शक्ति मांग नहीं सकती, कोई प्रभाव प्राप्त नहीं कर सकता, अथवा धन खरीद नहीं सकता। न ही उसे समय के आंसू मिटा सकते हैं अथवा शोक नष्ट कर सकता है, एक वस्तु, जो स्विजरलैंड की नीली झीलों अथवा इटली के भव्य भवनों में प्राप्त नहीं हो सकती।

वह एक ऐसी वस्तु है, जो धैर्य के साथ शक्ति प्राप्त करती है बाधाओं के उपरान्त बढ़ती है, शीतकाल में उष्ण होती है, बसन्त में शोभायमान होती है, ग्रीष्म में समीर बन बहती है और पतझड़ में फलती है---मैंने प्रेम को पाया।

: १८ :

फूल का गीत

मैं एक प्रिय शब्द हूँ, बोला और दुहराया हुआ
प्रकृति की वाणी द्वारा
मैं एक नक्षत्र हूं, गिरा हुआ
नील वितान से हरे गलीचे पर,
मैं पुत्री हूँ, तत्वों की,
जिनसे शीत ऋतु ने गर्भ धारण किया,
जिसको वसन्त ऋतु ने जन्म दिया; मैं
ग्रीष्म की गोदी में पली और पतझड़ के बिछौने में सोई।

उषाकाल में मैं समीर के साथ मिलती हूं
प्रकाश के आगमन की घोषणा करने को;
संध्या समय मैं चिड़ियों का साथ करती हूं
प्रकाश को विदा देने में।

मैदान सुसज्जित होते हैं
मेरे सुन्दर रंगों से, और वायु
सुरभित होती है मेरे सौरभ से।

जब मैं निद्रा को अंक में भरती हूं, रात्रि की

आँखें मेरा पहरा देती हैं, और जब मैं
जागती हूं, मैं सूर्य की ओर ताकती हूं, जो
दिवस की एकमात्र आँख है।

मैं पीती हूं मदिरा के बदले ओस और सुनती हूं
चिड़ियों के स्वर, और नर्तन करती हूं
घास के तालबद्ध झोंकों पर।

मैं प्रेमी का उपहार हूं; मैं वर-माला हूं;
मैं सुख के एक क्षण की स्मृति हूं;
मैं जीवितों की मृतकों को अंतिम भेंट हूं;
मैं आनन्द का एक अंश हूं और शोक का एक भाग।

परन्तु मैं ऊपर की ओर देखती हूं, केवल प्रकाश देखने को,
और नीचे की ओर कभी नहीं देखती, अपनी छाया देखने को।
यह ज्ञान है, जो मनुष्य को सीखना ही चाहिए।

: १६ :

स्वप्न

वहां खेत के बीच, एक स्वच्छ झरने के पास, मैंने चिड़ियों का एक पिंजरा देखा जिसकी तीलियां और चूलें एक कुशल कारीगर के हाथों से बनाई गई थीं। एक कोने में एक मरी हुई चिड़िया पड़ी थी और दूसरे में दो कटोरियां थी—एक पानी से रिक्त और दूसरी दाने से खाली। मैं वहां श्रद्धा भाव खड़ा रहा, मानो वह निर्जीव चिड़िया और पानी की कलकल गहन खामोशी और आदर के योग्य थे—हृदय और आत्मा द्वारा निरीक्षण के योग्य कुछ चीज़।

जैसे ही मैंने अपने-आपको परीक्षण और मनन में लीन किया, मैंने देखा कि वह बेचारी मर गई थी प्यास से, जल-प्रवाह के पास; और भूख से भरे-पूरे खेत के बीच, जो जीवन का आश्रय है; अपनी लोहे की तिजोरी में बंद, सोने की ढेरियों के बीच भूख से मरनेवाले एक धनी पुरुष के समान।

मैंने अपनी आंखों के सम्मुख देखा उस पिंजरे को एकाएक एक मानव-कंकाल में परिणत होते, और मृत चिड़िया को मानव हृदय में, जिसके गहरे घाव में से, जो एक शोकाकुल स्त्री के ओठों के समान दिखता था, रक्त वह रहा था। उस घाव से एक आवाज़ आई यह कहते हुए, "मैं मानव हृदय हूं, विषय का वन्दी और सांसारिक नियमों का शिकार।

"परमात्मा के सौंदर्य के क्षेत्र में, जीवन के स्रोत के तट पर मैं मानव द्वारा निर्मित विषयों के पिंजरे में बन्दी किया गया था।

"सुन्दर सृष्टि के बीच मैं उपेक्षित ही मृत्यु को प्राप्त हुआ, क्योंकि ईश्वर की अनुकम्पा के स्वातंत्र्य का उपयोग करने से मैं वंचित किया गया था।

"सौंदर्य की प्रत्येक वस्तु, जो मेरे प्रेम और मेरी आकांक्षा को जागृत करती है, एक कलंक है, मनुष्य की धारणाओं के अनुसार; भलाई की प्रत्येक वस्तु का, जिसकी मैं अभिलाषा करता हूं, अस्तित्व ही नहीं है, उसके मत के अनुसार।

"मैं परित्यक्त मानव हृदय हूं, मनुष्य की आज्ञाओं की घृणित कालकोठरी में बंद, सांसारिक शक्ति की जंजीरों से जकड़ा हुआ, मृत और हंसनेवाले समाज से भुलाया हुआ, जिसकी जिह्वा बंधी हुई है और जिसकी आँखें दृश्यभाव आंसुओं से रहित हैं।"

इन सब शब्दों को मैंने सुना और मैंने उन्हें उस आहत हृदय से बहनेवाली प्रतिक्षण क्षीण होती हुई रक्त की धारा के साथ प्रकट होते हुए देखा।

कुछ और भी कहा गया, परंतु मेरी अश्रु-धूमिल आँखों और चीत्कार करती हुई आत्मा ने देखने अथवा सुनने में रुकावट डाल दी।

: २० :

विजेता

झील के किनारे, सरों और सरई के वृक्षों की छाया में, शान्त और मौन जलराशि की ओर ध्यानपूर्वक देखता हुआ एक कृषक-पुत्र बैठा था।

उसका पालन-पोषण प्रकृति के सामीप्य में हुआ था, जहां प्रत्येक वस्तु प्रेम को व्यक्त करती है—शाखाएं आलिंगन करती हैं, पुष्प लुभाते हैं, घास गर्व से झूमती है, चिड़ियां एक-दूसरे को पुकारती हैं और ईश्वर अनेक वाणियों में अपने संदेश सुनाता है।

वह एक नवयुवक था, और कल सांझ के समय उसने एक सुन्दर कुमारी को और तरुणियों के साथ इस झील के किनारे देखा था। उसी क्षण से वह उससे प्रेम करने लगा था—सम्पूर्णतया।

अब यह जानकर कि वह अमीर[1] की पुत्री है, वह अपने हृदय को इस प्रकार छूट ले लेने पर दोष दे रहा था। किन्तु दोष देना हृदय को अपनी आकांक्षा से कभी हटा नहीं सकता और एकांत आत्मा को सत्य से विमुख नहीं कर सकता। हृदय और आत्मा के बीच उधेड़बुन में पड़ा मनुष्य उत्तरी और दक्षिणी पवनों के बीच पड़ी हुई कोमल शाखा के समान है।

जब उसने अपने सजल नेत्रों से चारों ओर देखा, तो उसने

[1] शासक

साधारण वनफ़शे को शोभायुक्त चमेली के पास ही फूलते देखा; उसने पंख फड़फड़ानेवाले पक्षी को उसी पेड़ पर एक लाल छाती-वाली सुन्दर छोटी-सी चिड़िया के साथ बैठे देखा। फिर भी उसके हृदय के कोलाहल ने आग्रह किया कि वैभवशाली वृक्ष उस की जड़ों पर अतिक्रमण करनेवाली घास से कष्ट पाता है।

वह अपनी पीड़ा से रो पड़ा, परन्तु तीव्रगामी प्रेतों के समान घड़ियां बीत गईं, और अनुराग और माधुरी से परिपूर्ण एक उच्छ्वास के साथ उसने कहा, जो मैं यहां देखता हूं, वह है प्रेम, मेरा उपहास करता हुआ, मेरी आशाओं को करुणा में और मेरी आकांक्षाओं को कलंक में परिवर्तित करता हुआ।

"प्रेम, जिसकी मैं पूजा करता हूं, मेरे हृदय को अमीर के राजभवन की ओर ऊंचा उठाता है और कृषक की झोपड़ी की ओर नीचे गिराता है, वह मेरे प्राणों में दृढ़ता से प्रवेश कराता है प्रेमियों से घिरी हुई, दासों की सेवा का उपभोग करती हुई और वंश-परम्परा की शक्ति से रक्षित ऐक नवयुवती का।

"ओ प्रेम ! मैं तेरा अनुसरण कर रहा हूं।

"तू मुझसे क्या चाहता है ! मैं तेरे साथ जलते हुए मार्ग पर चला हूं और जब मैंने अपनी आँखें खोलीं, मैने कुछ नहीं देखा अन्धकार के सिवा। मेरे होठ कांपे, परन्तु तूने उन्हें वेदना के शब्दों के अलावा कुछ नहीं कहने दिया। प्रेम, तूने अपनी उपस्थिति को मधुरता के लिए मेरे हृदय में एक भूख भरदी है, क्योंकि मैं दुर्बल हूं और तू शक्तिशाली। तू मेरे साथ संघर्ष क्यों कर रहा है ?

"मै निर्दोष हूं और न्यायी है। तू मुझे क्यों सताता है ?

"तू मेरा जीवन ही है। तू मुझे दुख क्यों देता है ?

"तू मेरी शक्ति है। तू मुझे दुर्बल क्यों करता है ?

"तू मेरा पथ-प्रदर्शक है। तू इस वीराने में मेरा साथ क्यों छोड़ रहा है ?

"मैं तेरी दया के चरणों में पड़ा हूं, और तेरे अपने मार्ग के अतिरिक्त किसी मार्ग पर नहीं चलूंगा। यह तेरी इच्छा है और मेरा आज्ञापालन है, जो मेरी आत्मा को खुले क्षेत्र में तेरे पंखों की छाया में सुखी करते हैं।

"जल प्रवाह दौड़े जाते हैं, अपने प्रेमी सागर के पास।

"पुष्प मुस्कराते हैं, अपने प्रियतम सूर्य की ओर।

"बादल उतरते हैं, अपनी प्रणयांकांक्षी घाटी पर।

"मैं जल प्रवाहों से अनसुना, पुष्पों से अनदेखा और बादलों से अनजाना हूं।

"मैं अपने प्रेम में एकाकी हूं, उस एक से भी दूर, जो अपने पिता के रक्षक-दल के एक सिपाही के रूप में भी मुझे स्वीकार नहीं करती है, न अपने राजमहल के दास के समान ही। वह मेरे अस्तित्व से भी अनभिज्ञ है।"

वह एक क्षण के लिए चुप हुआ, मानो जल-प्रवाह के कल-कल और पुष्पों के मर्मर की भाषा सीखना चाह रहा हो। फिर उसने कहा, "और तुम, जिसका नाम लेने से मुझे भय लगता है, वैभव की छाया, गौरव की दीवारों और लौह-द्वारों के पीछे रहती हो। हम अनन्त के सिवा और कहां मिल सकते हैं ? वहां समानता का राज्य है और आत्म-जीवन व्यक्त किया जा सकता है।

"सुन्दरि ! तुमने अधिकार कर लिया है मेरे हृदय पर, जिसे प्रम ने आशीर्वाद दिया है, और दास बना लिया है मेरी आत्मा को, जिसे ईश्वर ने सम्मानित किया है।

"कल मैं चिन्तामुक्त था, इन खेतों में शान्तिपूवक रहता हुआ; फिर भी आज मैं बन्दी हूं अपने खोये हुये हृदय का।

"जब मैंने तुम्हें देखा, मैंने संसार में अपने आगमन के उद्देश्य को समझा।

"जब मुझे ज्ञात हुआ कि तुम एक राजकुमारी हो और मैंने अपनी निर्धनता पर दृष्टि डाली, मैंने जाना कि ईश्वर के आधीन मनुष्य से अप्रकट एक रहस्य है; एक गुप्त मार्ग आत्मा को उन स्थानों की ओर ले चलता है, जहां प्रेम संसार के व्यवहार को भूल जाये। जब मैंने तुम्हारी आँखों को देखा, मैंने जाना कि यह मार्ग स्वर्ग की ओर ले जाता है, जिसका द्वार मानव हृदय है।

"और जब मैंने तुम्हारे पद की अपनी हीनता से तुलना की, मैंने उन्हें एक दानव और एक बौने के समान युद्ध में रत देखा, और मुझे बोध हुआ कि यह संसार अब मेरा गृह-प्रदेश नहीं है।

"कल मैंने तुम्हें तरुणियों से घिरा हुआ देखा, सदाबहार के पुष्पों के बीच में एक गुलाब के समान, और मुझे विश्वास हुआ कि मेरे स्पप्नों की कल्पना स्वर्ग से मेरे पास उतर आई है। परन्तु तुम्हारे पिता के वैभव के ज्ञान के साथ मुझे मालूम हुआ कि गुलाब के तोड़नेवाले हाथ छिपे हुए और बहुत देर में देखे हुए कांटों द्वारा लोहू-लुहान होकर रहेंगे और मेरे स्वप्नों की निधियां जगने पर खो जायेगी।"

नवयुवक उठ खड़ा हुआ और उदास भाव से धीरे-धीरे एक

सोते की ओर चल पड़ा। उसने अपना मुख अपने हाथों में छुपा लिया और निराश होकर प्रार्थना करने लगा, "हे मृत्यु ! आ और मुझे उठा ले, क्योंकि पृथ्वी, जिसके कांटे उसके गुलाब के फूलों का दम घोंटते हैं, न्यायी नहीं है। आ और मुझे इस दुनिया में भेदभाव के साम्राज्य से मुक्त कर, जो प्रेम को अपने स्वर्गिक गौरव से सिंहासनच्युत करता है और उसका स्थान थोथी प्रतिष्ठा को प्रदान करता है। मेरी सहायता कर, मृत्यु, क्योंकि अनंत ही एकमात्र आश्रय है। वहां मैं अपनी प्रियतमा की प्रतीक्षा करूंगा।"

संध्या समय तक भी उसका शरीर और मस्तिष्क स्थिर नहीं थे, और सूर्य ने अपनी किरणें खेतों पर से समेट ली थीं। वह उस छोटे से कुंज में बैठ गया, जहां अमीर की पुत्री घूमने आई थी। उसने अपना सिर अपनी छाती पर रख लिया, मानो हृदय को फट जाने से बचाने के लिए।

उसी क्षण एक सुंदरी युवती सरों के वृक्षों के पीछे से निकली। उसका दुपट्टा घास पर लटक रहा था। वह उसके पास खड़ी हुई और उसने अपना कोमल हाथ उसके सिर पर रखा। मानो पागलपन में, वह उसकी ओर ताकने लगा, अपनी आँखों के दृश्य पर अविश्वास करते हुए। वह अमीर की पुत्री थी।

वह घुटनों के बल झुक गया, उसी तरह जिस तरह मूसा तूर का जलवा देखकर झुक गया था; उसने बोलने का प्रयत्न किया, लेकिन अपनी वाणी को उसने रुद्ध पाया और उसके स्थान पर आँसू बहने लगा।

राजकुमारी ने उसका आलिंगन किया और उसके ओठों

पर एक चुम्बन अंकित किया; उसने उसके आँसुओं को अपने कोमल गालों से पोंछा, और संगीत के स्वरों से अधिक सुखदायक वाणी में उसने कहा, "तुम मेरी उदासी के स्वप्नों में दृष्टिगोचर हुए, और तुम्हारी छवि ने मेरे सूनेपन को समाप्त कर दिया। तुम मेरे खोये हुए प्राणों के साथी हो, और तुम मेरे अर्द्धांग हो, जिससे मैं जब इस संसार में आई थी, अलग कर दी गई थी।

"तुमसे मिलने को मैं राजभवन छोड़ आई हूं, और अब तुम मेरे साथ हो। मेरे लिए भयभीत न हो; मैंने अपने पिता के वैभव को ठुकरा दिया है, तुम्हारे साथ सुदूर प्रदेशमें चलने और तुम्हारे साथ जीवन और मृत्यु का प्याला पीने को। आओ, हम यहां से कहीं और चलें, जहां यह संसार हमारे साथ न हो सकेगा।"

दोनों वृक्षों के बीच साथ-साथ चलने लगे, जबतक कि रात्रि के अंधकार ने उन्हें छिपा नहीं लिया। और जैसे वे चले, वे ज्योति की बढ़ती हुई दीप्ति में ढंक गये। अब वे अंधेरे से निडर थे, अमीर के दण्ड से निर्भय।

+ + +

वहां, देश क सुदूरतम कोने में, अमीर के सिपाहियों को दो मानव कंकाल मिले। एक के गले में सोने का एक तावीज बंधा था, और उनके पास एक-एक बड़ा पत्थर पड़ा था। दोनों पर लिखा था :

जो मृत्यु छीन लेती है
कोई प्राणी लौटा नहीं सकता;

जिसे स्वर्ग ने आशीर्वाद दिया है
कोई प्राणी दण्ड नहीं दे सकता;
जिसे प्रेम ने एक कर दिया है
कोई प्राणी अलग नहीं कर सकता;
जो नियति ने निश्चित कर दिया है
कोई प्राणी बदल नहीं सकता।

: २१ :

प्रेम का गीत

मैं प्रेमी की आंखें हूं, और आत्मा की
मदिरा, और हृदय का पोषण।
मैं एक गुलाब हूं।
मेरा हृदय उषाकाल में विकसित होता है और
कुमारी युवती मेरा चुम्बन करती है और लगाती है मुझे
अपने वक्ष से।
मैं वास्तविक ऐश्वर्य का आवास हूं, और
आनन्द का उद्‌गम औह सुख एवं शान्ति का प्रारम्भ।
मैं सौंदर्य के अधरों परमधुर मुस्कान हूं। जब नवयुवक
मेरे पास आ पहुंचता है वह अपनी थकान भूल जाता है, और
उसका समस्त जीवन मधुर स्वप्नों का सत्य बन जाता है।

मैं कवि का हुलास हूं,
और कलाकार का प्रकाशन,
और संगीतकार की प्रेरणा।

मैं बालक के हृदय में एक पवित्र सिंहासन हूं,
दयामय माता द्वारा प्रतिपूजित।

मैं हृदय की पुकार में प्रकट होता हूं, मैं याचना को ठुकराता हूं,
मेरी परिपूर्णता हृदय की आकांक्षा का अनुसरण है;
वह वाणी के थोथे अधिकार का त्याग करती है।

मैं सृष्टि की प्रथम स्त्री (हौवा) के द्वारा प्रथम पुरुष (आदम)
के सामने प्रकट हुआ
और उसे निर्वासन का दण्ड मिला;
फिर भी मैं सुलेमान पर प्रकाशित हुआ, और
उसने मेरी उपस्थिति से ज्ञान प्राप्त किया।

मैंने हेलेना पर अपनी मुस्कान अंकित की और
उसने ताखाड़ा को नष्ट किया;
फिर भी मैंने क्लिओपेट्रा को अपना मुकुट पहनाया और
शान्ति का
नील की घाटी में साम्राज्य हुआ।

मैं युगों क समान हूं—आज निर्माण करते हुए
और कल विनाश करते हुए;
मैं एक देवता के समान हूं, जो उत्पन्न करता है और
नाश करता है;
मैं पुष्प के उच्छ्वास से अधिक मधुर हूं;
मैं प्रचण्ड तूफान से अधिक प्रबल हूं।

केवल उपहार मुझे मोहित नहीं करते,
वियोग मुझे निराश नहीं करता,
निर्धनता मुझे दूर नहीं भगाती,
ईर्षा मेरी चेतनता सिद्ध नहीं करती,
उन्माद मेरी उपस्थिति प्रमाणित नहीं करता।

ओ खोज करनेवालो ! मैं सत्य हूं, सत्य का पुजारी;
और मुझे खोजने और प्राप्त करने और मेरी रक्षा करने में
तुम्हारा सत्य मेरे व्यवहार का निर्धारण करेगा।

: २२ :

दो इच्छाएं

रात्रि की निस्तब्धता में काल ईश्वर के पास से पृथ्वी की ओर उतरा। वह एक नगर के ऊपर मंडराया और उसकी आंखों ने वहां के घरों में प्रवेश किया। उसने देखा सपनों के पंखों पर उड़ती हुई आत्माओं को, और लोगों को, जिनका समर्पण निद्रा की दया को हो चुका था।

जब चन्द्रमा क्षितिज के नीचे छिप गया और नगर में अंधेरा हो गया, काल चुपचाप घरों के बीच चलने लगा—किसी वस्तु को स्पर्श न करने का ध्यान रखते हुए—यहांतक कि वह एक महल में पहुंच गया। वह बिना रोक-टोक बन्द दरवाजों से होकर अन्दर घुसा, और धनवान पुरुष की शैया के पास खड़ा हुआ, और जैसे ही काल ने उसका मस्तक छुआ, सोनेवाले की आंखें खुल गईं अत्यन्त भय का प्रदर्शन करते हुए।

जब उसने उस प्रेत-रूप को देखा, उसने भय और क्रोध मिश्रित वाणी में कहा, "ओ भयानक स्वप्न ! चले जाओ। मुझे छोड़ दो, ओ डरावने प्रेत ! तुम कौन हो ? तुम इस महल में कैसे घुसे ? तुम चाहते क्या हो ? यह स्थान फौरन छोड़ दो, क्योंकि मैं इस घर का स्वामी हूं, और मैं अपने दासों और रक्षकों को बुला लूंगा और उन्हें तुमको मार डालने की आज्ञा दे दूंगा !"

तब काल धीरे से, किन्तु अप्रत्यक्ष गर्जन से, बोला, "मैं काल

हूं। खड़े हो और नत हो।"

पुरुष ने उत्तर दिया, "तुम क्या चाहते हो ? तुम यहां क्यों आये हो, जब मैंने अभी अपने कार्यों को पूरा नहीं किया है ? मेरे जैसी शक्ति से तुम क्या फल चाहते हो ? दुर्बल मनुष्य के पास जाओ, और उसे ले जाओ !

"मैं तुम्हारे खूनी पंजों और खिंचे हुए चेहरे को देखने से घृणा करता हूं, और तुम्हारे भयानक हड्डियोंवाले पंखों और शव-तुल्य शरीर से मेरी आंखें बेचैन हो जाती हैं।"

भयानक ज्ञान-प्राप्ति के एक निस्तब्ध क्षण के पश्चात् उसने कहा, "नहीं ,नहीं, दयामय काल ! मेरी बातों पर ध्यान मत दो, क्योंकि भय उसे प्रकट करता है, जिसका हृदय निषेध करता है।

"मेरे सोने का एक ढेर ले लो, अथवा मेरे दासों के मुट्ठी-भर प्राण ले लो, परंतु मुझे छोड़ दो। मुझे जीवन के साथ लेखा-जोखा तय करना है; मुझे लोगों से बहुत-सा सोना लेना है, मेरे जहाज़ अभी बन्दरगाह पर नहीं पहुंचे हैं, मेरी गेहूं की फसल अभी नहीं काटी गई है। तुम जो चाहो ले लो, परंतु मेरी जान छोड़ दो ! काल, मैं अलौकिक सौंदर्य के अन्त पुर का स्वामी हूं, तुम्हारी पसंद तुम्हें मेरा उपहार है। देखो तो, काल !—मेरे केवल एक बच्चा है, और मैं उसे बहुत अधिक प्यार करता हूं, क्योंकि वह इस जीवन का एकमात्र आनन्द है। मैं सर्वश्रेष्ठ बलिदान करता हूं—उसे ले लो, परन्तु मुझे छोड़ दो !"

काल धीमे से बड़बड़ाया, "तुम धनाढ्य नहीं हो, बल्कि अत्यंत निर्धन हो।" तब काल ने उस सांसारिक दास का हाथ पकड़ा, उसके सत्य रूप को अलग किया और देवदूतों को सुधार

करने का कठिन कार्य सौंपा।

और काल धीरे-धीरे निर्धनों के घरों के बीच चला, यहांतक कि वह पहुंच गया उस अतीव निर्धन स्थान तक, जो उसे मिल सकता था। वह उसमें घुसा और एक शैया के पास पहुंचा, जिसपर एक नवयुवक उखड़ी हुई नींद सो रहा था। काल ने उसकी आंखों को छुआ। जैसे ही नवयुवक ने काल को पास खड़े देखा, वह उछल पड़ा, और प्रेम तथा आशा से ओत-प्रोत वाणी में उसने कहा, "मैं उपस्थित हूं, मेरे सुन्दर काल ! मेरे प्राणों को स्वीकार करो, क्योंकि तुम मेरे सपनों की आशा हो। उनकी सिद्धि बनो ! मेरा आलिंगन करो, प्रिय काल ! तुम दयामय हो; मुझे छोड़ना मत। तुम ईश्वर के संदेशवाहक हो; मुझे उसके पास पहुंचा दो। तुम सत्य के दाहिने हाथ हो और दया के हृदय; मेरी उपेक्षा मत करना।

"मैंने बहुत बार तुम्हारे लिए याचना की है, परंतु तुम नहीं आये; मैंने तुम्हें खोजा है, परंतु तुम मुझसे बचते रहे; मैंने तुम्हें पुकारा है, परंतु तुमने सुना नहीं। तुम मेरी अब सुन रहे हो—मेरी आत्मा को गले लगाओ, प्रिय काल !"

काल ने अपना कोमल हाथ उसके कांपते होठों पर रखा, समस्त सत्य-रूप को अलग किया, और उसे सुरक्षित ले जाने के लिए अपने पंखों के नीचे छिपा लिया। और आकाश को लौटते हुए, काल ने पीछे फिरकर देखा और अपनी चेतावनी प्रकट की :

"केवल वही नित्यता को प्राप्त होते हैं
जो संसार में नित्यता को खोज लेते हैं।"

: २३ :

मनुष्य का गीत

मै यहां आदिकाल से था,
और अब भी यहां हूं और
मैं यहीं रहूंगा संसार के अन्तकाल तक,
क्योंकि मेरे शोक-पीड़ित जीवन का
कोई अन्त नहीं है।

मैं अनन्त आकाश में घूमा और
कल्पना-जगत में ऊंचा उंड़ा और
नभमण्डल में तैरा। परन्तु यहां
मैं हूं, परिमितता का बन्दी।

मैंने कन्फूशस के उपदेशों को सुना;
मैने ब्रह्मा के ज्ञान का श्रवण किया;
मैं बुद्ध के साथ बोधि-वृक्ष के नीचे बैठा।
फिर भी मैं यहां हूं, अज्ञान
और नास्तिकता के साथ जीवित।

मैं सिनाई पर था जब जीहोवा (ईसा)
मूसा के पास आया;

मैंने ईसा के चमत्कारों को जोर्डन
पर देखा;
मैं मदीना में था, जब मोहम्मद वहां आया।
फिर भी यहां मैं हूं, भ्रम का बन्दी।

फिर मैंने बेबीलोन की शक्ति को देखा;
मैंने मिस्र के गौरव को जाना;
मैंने रोम की युद्ध-रत महानता का अवलोकन किया।
फिर भी मेरी प्रारम्भिक शिक्षा ने इन सिद्धियों की
दुर्बलता और दुख को दर्शाया।

मैंने ऐनदूर के ऐन्द्रजालिकों से बातचीत की;
मैंने एसीरिया के महन्तों से तर्क किया;
मैंने फिलिस्तीन के पैगम्बरों से गहनता प्राप्त की।
फिर भी, मैं अबतक सत्य को खोज रहा हूं।

मैंने शान्त भारत से ज्ञान प्राप्त किया;
मैंने अरब की प्राचीनता की परीक्षा की;
मैंने वह सब कुछ सुना, जो सुना जा सकता है।
फिर भी, मेरा हृदय बहरा और अन्धा है।

मैंने स्वेच्छाचारी शासकों के हाथों यातना पाई,
मैंने उन्मत्त आक्रमणकारियों के नीचे दासता की पीड़ा झेली;
मैंने निरंकुशता द्वारा लादी गई भूख की व्यथा सही;

फिर भी, मुझमें कोई आन्तरिक शक्ति है
जिसके द्वारा मैं प्रत्येक दिवस का अभिनन्दन करने के लिए
संघर्ष करता हूं।
मेरा मस्तिष्क परिपूर्ण है, परन्तु मेरा हृदय रीता है;
मेरा शरीर वृद्ध है, परन्तु मेरा हृदय एक बालक है !
कदाचित् यौवन-काल में मेरा हृदय विकसित होगा, परन्तु मैं
प्रार्थना करता हूं वृद्ध होने की और ईश्वर के पास लौट जाने के
क्षण को प्राप्त होने की।
केवल तभी मेरा हृदय परिपूर्ण होगा !

मैं यहां आदिकाल से था,
और अब भी मैं यहां हूं। और
मैं यहीं रहूंगा संसार के अन्त-काल तक,
क्योंकि मेरे शोक-पीड़ित जीवन का
कोई अन्त नहीं है।

कल और आज

स्वर्ण संचय करनेवाला अपने प्रासाद के उद्यान में चला और उसके साथ चली उसकी विपत्तियां। और उसके सरपर मंडराई चिन्ताएं, जिस प्रकार शव के ऊपर गिद्ध मंडराते हैं, यहांतक कि वह एक सुन्दर झील के पास पहुंच गया, जो शोभा-युक्त संगमरमर की प्रतिमाओं से घिरी हुई थी।

प्रेमी की कल्पना से स्वतन्त्रता-पूर्वक बहते हुए विचारों के समान मूर्त्तियों से गिरते हुए पानी को देखता हुआ और तीव्रता से देखता हुआ अपने महल को, जो एक नवयुवती कुमारी के गाल पर जन्मजात चिह्न के समान एक पहाड़ी पर खड़ा था, वह वहां बैठा रहा। उसकी कल्पना-शक्ति ने उसके सम्मुख उसके जीवन के नाटक के पन्नों को खोला, जिन्हें उसने पढ़ा गिरते हुए आंसुओं द्वारा, जो उसकी आंखों को ढक रहे थे और प्रकृति में मनुष्य के दुर्बल योगदानों को देखने से रोक रहे थे।

उसने तीव्र शोक से अपने प्रारम्भिक जीवन के चित्रों को देखा, जिन्हें देवताओं ने आकार प्रदान किया था और अन्त में अपनी पीड़ा और अधिक देखने में वह असमर्थ हो गया। उसने जोर से कहा :

"कल मैं अपनी भेड़ों को हरी घाटी में चरा रहा था, अपने अस्तित्व का आनन्द लेते हुए, अपनी बंसरी बजाते हुए और

अपना सर ऊंचा उठाये हुए। आज मैं लोलुपता का बन्दी हूं। स्वर्ण स्वर्ण की ओर ले जाता है, फिर बेचैनी की ओर, और अन्त में कुचल डालनेवाली व्यथा की ओर।

"कल मैं गानेवाली और खेतों में इधर-उधर स्वतन्त्रता पूर्वक उड़नेवाली एक चिड़िया के समान था। आज मैं दास हूं अस्थिर धन का, समाज के नियमों का, नगर के रिवाजों का और खरीदे हुए मित्रों का, मनुष्य के विचित्र और संकुचित नियमों के अनुकूल आचरण करके लोगों को प्रसन्न करनेवाला। मेरा जन्म हुआ था स्वतन्त्र रहने और जीवन की उदारता का उपभोग करने के लिए परन्तु मैं अपने-आपको भारवाहक पशु के समान पाता हूं, जिसके ऊपर सोने का बोझ इस बुरी तरह लदा हुआ है कि उसकी कमर टूट रही है।

"कहां हैं विस्तृत मैदान, संगीतमय जल-प्रवाह, निर्मल वायु, प्रकृति का सामीप्य ? कहां है मेरा इष्टदेव ? मैंने सबकुछ खो दिया है ! कुछ शेष नहीं रहा है, अतिरिक्त एकाकीपन के, जो मुझे दुखी करता है; स्वर्ण के, जो मेरा उपहास करता है; दासों के, जो पीठ पीछे मुझे कोसते हैं; और एक महल के, जिसे मैंने अपने सुख के लिए समाधि के समान बनाया है और जिसकी महानता में मैंने अपना हृदय गंवा दिया है।

"कल मैं कुंजों और पहाड़ियों में एक अल्हड़ बद्दू कन्या के साथ घूमा करता था। सदाचार हमारा साथी था, प्रेम हमारा आनन्द और चन्द्रमा हमारा संरक्षक। आज मैं कृत्रिम सौंदर्यवाली उन स्त्रियों के बीच हूं, जो सोने और जवाहरात के लिए अपने-आपको बेचती हैं।

"कल मैं चिन्ता रहित था, चरवाहों के साथ जीवन के समस्त सुख में भाग लेते हुए; खेलते, खाते, काम करते, गाते और हृदय के सत्य के संगीत पर साथ-साथ नाचते हुए। आज मैं अपने-आपको लोगों के बीच भेड़ियों में एक भयभीत मेमने के समान पाता हूं। जब मैं सड़कों पर चलता हूं, वे मेरी ओर घृणापूरित आँखों से देखते हैं और मेरी ओर तिरस्कार तथा ईर्ष्या से अंगुलियां उठाते हैं, और जब मैं उद्यान से चुपके से गुजरता हूं, मैं अपने चारों ओर चढ़ी हुई त्योरियां देखता हूं।

"कल मैं अपने सुख के कारण धनी था और आज मैं अपने स्वर्ण के होते हुए भी निर्धन हूं।

"कल मैं एक सुखी चरवाहा था—अपनी भेड़ों को ऐसे देखते हुए, जैसे एक दयालु राजा अपनी सन्तुष्ट प्रजा को हर्ष से देखता है। आज मैं एक दास हूं—अपने ऐश्वर्य के आगे खड़ा हुआ, मेरा ऐश्वर्य, जिसने जीवन के उस सौन्दर्य को लूट लिया है, जिसे मैं कभी जानता था।

"मुझे क्षमा करो, मेरे न्यायकर्त्ता! मुझे नहीं मालूम था कि धन मेरे जीवन के टुकड़े-टुकड़े कर देगा और मुझे कठोरता और जड़ता की कालकोठरी में ले जायगा। जिसे मैं गौरव समझता था, वह और कुछ नहीं, केवल असीम नर्क है।"

वह परिश्रान्त भाव से उठा और धीरे-धीरे चला अपने महल की ओर, ठंडी सांस लेते हुए और दोहराते हुए, "क्या यही वह है, जिसे लोग वैभव कहते हैं? क्या यही वह देवता है, जिसकी मैं सेवा और पूजा कर रहा हूं? क्या यही वह है जिसे मैं पृथ्वी पर ढूढ़ता हूं? क्यों नहीं मैं सन्तोष के एक कण से इसका सौदा

कर सकता ? कौन मेरे हाथों बेचेगा एक सुन्दर विचार मनों सोने के बदले ? कौन मुझे देगा प्यार का एक क्षण मुट्ठी-भर मणियों के बदले ? कौन मुझे देगा वह आंख, जो दूसरों का हृदय देख सके, लेकर मेरा समस्त कोष बदले में ?"

जैसे ही वह महल के फाटक पर पहुंचा, उसने पीछे घूमकर नगर की ओर देखा, उसी प्रकार जैसे जेरेमिया ने यरूशलम की ओर देखा था। उसने अपनी बाहें सन्तापमय शोक से ऊपर उठाईं और चिल्लाया, "ओ कोलाहल-पूर्ण नगर के लोगो ! तुम, जो अंधकार में रह रहे हो, दुर्भाग्य की ओर शीघ्रता से बढ़ रहे हो, मूर्खता से भाषण और प्रचार कर रहे हो, कबतक तुम अज्ञान में बने रहोगे ? कबतक तुम जीवन की मलिनता में निवास करते रहोगे और उसके उद्यानों से भागते रहोगे ? तुम संकीर्णता के जीर्ण-शीर्ण वस्त्र क्यों पहने हो, जब प्रकृति के सौंदर्य का रेशमी परिधान तुम्हारे ही लिए बना है ? ज्ञान का दीपक मद्धिम पड़ रहा है; उसमें तेल भरने का समय आ गया है। वास्तविक वैभव का घर नष्ट किया जा रहा है; उसे फिर से बनाने और उसकी रक्षा करने का समय आ गया है। अज्ञान के दस्युओं ने तुम्हारे शान्ति के कोष को चुरा लिया है, उसे वापस छीन लेने का समय आ गया है।"

उसी क्षण एक निर्धन पुरुष उसके सम्मुख खड़ा हुआ और उसने अपना हाथ भिक्षा के लिए पसारा। जैसे ही उसने भिक्षुक की ओर देखा, उसके ओठ खुल गये, उसकी आंखें एक कोमलता से चमक उठीं, और उसके चेहरे से दया की किरणें फूट पड़ीं। ऐसा प्रतीत होता था, मानो वह कल, जिसके लिए उसने झील

के तट पर रुदन किया था, उसका अभिनन्दन करने आ गया है उसने उस कंकाल को प्रेम से गले लगाया और उसकी झोली सोने से भर दी और प्रेम के माधुर्य में सनी निश्छल वाणी में उसने कहा, "कल फिर आना और अपने समस्त पीड़ित साथियों को अपने साथ लाना। तुम्हारी सारी सम्पत्ति लौटा दी जायगी।"

उसने अपने महल में प्रवेश किया यह यह कहते हुए, "जीवन में सब कुछ अच्छा है; स्वर्ण भी, क्योंकि वह एक शिक्षा देता है। धन तारोंवाले वाद्य-यन्त्र के समान है। वह, जो उसका भली प्रकार से प्रयोग करना नहीं जानता, केवल कर्कश संगीत ही सुनेगा। जो उसे रोके रहता है, उसे धन प्रेम के समान है। वह उसे धीरे-धीरे और दुख देकर मारता है और उसे वह जीवन प्रदान करता है, जो उसे अपने साथी मनुष्यों पर उंडेल देता है।"

सौन्दर्य के सिंहासन के सम्मुख

एक दिन अत्यन्न व्यस्त रहने के बाद मैं समाज की कठोर मुद्रा और नगर को पागल कर देनेवाले कोलाहल से भाग खड़ा हुआ और मैंने अपने थके हुए पांव विस्तृत घाटी की ओर बढ़ाये। इंगित करती हुई नदी के मार्ग और चिड़ियों के संगीतमय शब्दों का मैंने अनुसरण किया, यहांतक कि मैं एक एकान्त स्थान पर पहुंच गया, जहांपर वृक्षों की झूमती हुई हवाएं सूर्य को पृथ्वी का स्पर्श करने से रोकती थीं।

मैं वहां खड़ा हुआ, वह स्थान मेरी आत्मा को मनोरंजक लगा—मेरी तृषित आत्मा को—जिसने देखा था केवल जीवन की मृगतृष्णा को, उसकी मधुरता के बदले।

मैं विचारों में गहरा डूबा हुआ था और मेरी कल्पनाएं नभ-मण्डल में तैर रही थीं। तभी द्राक्षलता की एक टहनी, जो उसके अनावृत्त शरीर के कुछ भाग को ढके थी, लपेटे और अपने सुनहले बालों में पुष्पों का एक हार बांधे एक अप्सरा यकायक मेरे सम्मुख प्रकट हुई। मुझे आश्चर्य-चकित देख उसने यह कहते हुए मेरा अभिवादन किया, "मुझसे डरो मत; मैं वनदेवी हूं।"

"तुम्हारे जैसा सौन्दर्य इस स्थान में कैसे रह सकता है? कृपया मुझे बताओ कि तुम हो कौन और आई कहां से हो?" मैंने पूछा।

वह शान से हरी घास पर बैठ गई और उसने उत्तर दिया, "मैं प्रकृति की प्रतीक हूं। मैं वह चिर-कुमारी हूं जिसे तुम्हारे पूर्वज पूजते थे, और मेरे ही सम्मान में उन्होंने बालबेक और जाबील के मन्दिर और तीर्थस्थान बनवाये थे।"

मैंने यह कहने का साहस किया, "परन्तु वे मन्दिर और तीर्थस्थान नष्ट-भ्रष्ट कर दिये गये और मेरे उपासक पूर्वजों की अस्थियां पृथ्वी का ही एक अंग बन गईं; उनकी देवी की स्मृति बनाये रखने के लिए इतिहास के थोड़े-से विस्मृत दयनीय पन्नों के अतिरिक्त कुछ नहीं बचा।"

उसने उत्तर दिया, "कुछ देवियां अपने भक्तों के जीवन में जीवित रहती हैं और उनकी मृत्यु के साथ मर जाती हैं, जबकि और कुछ एक असीम और अनन्त जीवन व्यतीत करती हैं। मेरा जीवन सौंदर्य के उस संसार से स्थिर है, जिसे तुम जहां अपनी आंखें ठहराओगे, वहीं देखोगे। और यह सौंदर्य स्वयं प्रकृति है; यह पहाड़ियों में चरवाहे का आनन्द का प्रारम्भ है, और खेतों में किसान का सुख, और पहाड़ों और मैदानों के बीच भ्रमणशील जंगली जातियों का हर्ष। यह सौन्दर्य बुद्धिमानों को सत्य के सिंहासन पर बिठाता है।"

तब मैंने कहा, "सौन्दर्य एक भयानक शक्ति है !"

और उसने प्रत्युत्तर दिया, "मनुष्य सब चीजों से डरता है, अपने-आप से भी। तुम डरते हो आकाश से, जो आध्यात्मिक शान्ति का उद्गम-स्थान है; तुम डरते हो प्रकृति से, जो विश्राम और स्थिरता का निवास-स्थान है; तुम देवों के देव से डरते हो और उसे कोप के लिए दोषी ठहराते हो, जबकि वह प्रेम और

दया से परिपूर्ण है।''

मधुर स्वप्न-मिश्रित एक गहरी निस्तब्धता के पश्चात् मैंने कहा, ''मुझसे उस सौन्दर्य की बात करो, जिसकी परिभाषा और व्याख्या लोग अपनी-अपनी धारणा के अनुसार करते हैं; मैंने भिन्न-भिन्न ढंगों और प्रकारों से उसकी प्रतिष्ठा और पूजा होते देखी है।''

उसने उत्तर दिया, ''सौन्दर्य वह है, जो तुम्हारी आत्मा को आकर्षित करता है, और वह, जिसे 'देना' प्रिय है, 'लेना' नहीं। जब सौन्दर्य से तुम्हारा साक्षात होता है, तुम अनुभव करते हो कि तुम्हारी अन्तर-आत्मा की गहराई में बसे हाथ उसे तुम्हारे हृदय के राज्य में ले जाने को फैल जाते हैं। यह सुख और दुख से मिलकर बनी हूई एक शोभा है; यह वह अदृष्ट है, जिसे तुम देखते हो, और वह अलक्ष है, जिसे तुम जानते हो, और वह अव्यक्त है, जिसे तुम सुनते हो—यह पुण्यों की वह पवित्रता है, जो तुम्हारे स्वयं में प्रारम्भ होती है और तुम्हारी लौकिक कल्पना के बहुत परे समाप्त होती है।''

फिर वनदेवी मेरे निकट आई और उसने अपना सुरभित हाथ मेरी आंखों पर रखा। और जब वह लौट गई, मैंने अपने को घाटी में अकेला पाया। जब मैं नगर को लौटा, जहां की अशान्ति अब मझे उद्विग्न नहीं करती थी, मैं उसके शब्दों को दोहराता था :

''सौन्दर्य वह है, जो तुम्हारी आत्मा को आकर्षित करता है,
और वह, जिसे 'देना' प्रिय है, 'लेना' नहीं।''

: २६ :

मेरा पीछा छोड़ दो, मेरे निन्दक !

मेरा पीछा छोड़ दो, मेरे निन्दक !
उस प्रेम के नाम पर,
जो तुम्हारी आत्मा का
तुम्हारे प्रिय की आत्मा से संयोग कराता है;
उसके नाम पर,
जो मां की ममता के साथ प्राणों का
सम्बन्ध कराता है और तुम्हारे हृदय को
सन्तति-प्रेम से बांधता है। जाओ,
और मुझे मेरे अपने रोते हुए हृदय के
साथ छोड़ दो।

मुझे अपने सपनों के सागर में
तिरने दो; कल के आने तक
ठहरो, क्योंकि कल मेरे साथ अपनी इच्छानुसार
व्यवहार करने को स्वतन्त्र है।
तुम्हारी आलोचना केवल वह छाया है,
जो आत्मा के साथ लज्जा की
समाधि तक चलती है, और उसे
शीतल ठोस धरती का दर्शन कराती है।
मेरे अन्तर में एक छोटा-सा हृदय है

और मैं उसे उसके बन्दीगृह से
निकालकर अपने हाथ की हथेली पर
रखकर गहराई में उसकी परीक्षा करना
और उसके भेद को समझ लेना चाहता हूं।
अपने बाण उसकी ओर मत साधो कि कहीं
वह डर न जाये और छिप न जाये—बिना उंडेले ही
भेद के रक्त की बलि वेदी पर
अपने विश्वास की, जो उसे ईश्वर ने प्रदान किया था—
प्रेम और सौन्दर्य से उसका निर्माण करके।

सूर्य उदय हो रहा है और बुलबुल
गा रही है और मेहंदी वायुमण्डल में
अपनी सुरभि का श्वास ले रही है।
मैं अपने-आपको पापों की गहरी निद्रा से
मुक्त करना चाहता हूं। मुझे
रोको मत, मेरे निन्दक !

मुझे बहकाओ मत चर्चा से
जंगल के शेरों की अथवा
घाटी के सर्पों की,
क्योंकि मेरी आत्मा संसार के किसी भय को नहीं जानती
और विपत्ति की कोई चेतावनी स्वीकार नहीं करती—
विपत्ति के आगमन से पूर्व।

मुझे उपदेश मत दो, मेरे निन्दक ! क्योंकि
संकटों ने मेरे हृदय को विकसित कर दिया है और

आंसुओं ने मेरी आंखों को निर्मल कर दिया है
और दोषों ने मुझे हृदय की भाषा
सिखा दी है।

निर्वासन की बात मत करो, क्योंकि आत्म-विवेक
मेरा न्यायिक है और वह मेरा समर्थन करेगा
और मेरी रक्षा करेगा—यदि मैं निर्दोष हूं,
और मुझे जीवन से वंचित करेगा—यदि मैं अपराधी हूं।
प्रेम का जुलूस निकल रहा है;
सुन्दरता अपनी ध्वजा फहरा रही है;
नवयौवन हर्ष की दुन्दुभि बजा रहा है;
मेरे सन्ताप को छेड़ो मत, मेरे निन्दक !

मुझे चलने दो, क्योंकि मेरा मार्ग
गुलाब और पोदीने से भरपूर है और वायु
स्वच्छता से सुरभित है।

वैभव और महानता की कहानियां मत सुनाओ,
क्योंकि मेरी आत्मा उदारता से समृद्ध
और ईश्वर की महिमा से महान है।

जातियों और नियमों और साम्राज्यों की
बात मत करो, क्योंकि समस्त संसार
मेरी जन्मभूमि है और सारे मनुष्य मेरे भाई हैं।

मेरे पास से चले जाओ,
क्योंकि तुम प्रकाश प्रदान करनेवाला पश्चाताप
लिये जा रहे हो और दिये जा रहे हो
अनावश्यक शब्द।

: २७ :

एक प्रेमी की पुकार

तुम कहां हो, मेरी प्रियतमे ?
क्या तुम उस छोटे से नन्दन-वन में हो,
फूलों को सिंचित करती, जो तुम्हारी ओर देखते रहे हैं
वैसे ही, जैसे
छोटे बच्चे अपनी माताओं के स्तन की ओर देखा करते हैं ?

या तुम अपने कक्ष में हो जहां पवित्रता
का सिंहासन प्रतिष्ठित किया गया है सम्मान तुम्हारे में,
जिसपर तुम मेरे हृदय और आत्मा की बलि चढ़ाती हो ?

या ग्रन्थों के बीच मानवीय ज्ञान की खोज कर रहीं,
जबकि तुम स्वर्गिक ज्ञान से परिपूर्ण हो ?
ओ मेरी आत्मा की संगिनि !
तुम कहां हो ?
क्या तुम मन्दिर में कर रहीं प्रार्थना ?
या अपने स्वप्नों के आश्रय-स्थल
खेत में प्रकृति का आह्वान कर' रहीं ?

क्या तुम निर्धनों की झोपड़ियों में हो,

भग्न-हृदयों को अपने अन्तर की मधुरता से सान्त्वना देतीं,
और उनके हाथों को अपनी उदारता से भरती हुई ?
तुम सभी जगह ईश्वर की शक्ति हो;
तुम युगों-युगों से अधिक बली हो ।

है क्या तुम्हें अपने मिलन दिवस की याद—
तुम्हारी आत्मा के प्रकाश ने
जब मण्डित हमें किया था,
और तैर रहे थे स्वर्गिक दूत प्रेम के
चारों ओर आत्मा का गुणगान करते हुए ?

याद है, हमारा बैठना छांह में शाखाओं की,
अपने-आपको जन-समाज से हुए बचाते,
ज्यों पसलियां हृदय के दैवी रहस्य की
अनिष्ट से रक्षा करती हैं ?

याद तुम्हें हैं वे जंगल, पगडंडी,
लिये हाथ में हाथ जहां हम घूमा करते थे,
और अपने सिर को सिर पर गेरे,
जैसे हम अपने को अपने ही भीतर छिपाया करते थे ?

याद करती हो तुम वह घड़ी, जब मैंने तुमसे ली विदा थी,
और वह चुम्बन,
जो तुमने मेरे ओठो पर आंका था ?

उस चुम्बन ने मुझे सिखाया कि ओठों का प्रेम से जुड़ना
उस दैविक रहस्य को प्रकट करता है
जिसे जिह्वा व्यक्त नहीं कर सकती !
वह चुम्बन परिचय था,
सर्वशक्तिमान के उस श्वास-जैसी महान उच्छ्वास का,
जिसने मिट्टी से मनुष्य बनाया ।

उस उच्छ्वास ने मेरा प्रवेश कराया
मेरी आत्मा के गौरव की घोषणा करते हुए आध्यात्म-लोक में
और वहीं वह जमीं रहेगी, जबतक हम फिर नहीं मिलते ।

मुझे याद है, जब तुमने मुझको चूमा था, फिर चूमा था,
और तुम्हारे गालों पर आंसू झड़ते थे,
और तुमने मुझसे यह कहा था :
"सांसारिक कारण से भौतिक काया को
बार-बार जुदा होना पड़ता है,
और लौकिक इच्छा से होकर मजबूर
अलग-अलग रहना पड़ता है ।
किन्तु आत्मा सुरक्षित मिली रहती है प्रेम-करों में,
जबतक आकर मृत्यु अंत में मिली आत्माओं को
पास ईश्वर के नहीं ले जाती है ।
जाओ, प्रियतम ! जीवन ने तुम्हें चुना प्रतिनिधि है;
उसकी आज्ञा मानो,
वह एक सुन्दरता है,
जो अपने अनुगामी को जीवन की माधुरी का प्याला देती है ।

रही बात मेरी अपनी सूनी बाहों की—
प्रेम तुम्हारा सान्त्वना-प्रद पति होगा मेरा
और स्मृति तुम्हारी, अमर सुहाग।"

तुम अब कहां हो, मेरी दूसरी 'अहं'?
जग रही हो क्या तुम रात्रि की निस्तब्धता में?
शुद्ध वायु मेरे हृदय की
प्रत्येक धड़कन और उसका प्रेम तुम तक पहुंचाये।

क्या तुम अपनी स्मृति में अंकित मेरे मुख को दुलराती हो?
वह मूर्ति
अब मेरी अपनी नहीं है,
क्योंकि शोक ने
अपनी छाया डाल दी है
अतीत की मेरी प्रसन्न आकृति पर।

सिसकियों ने निष्प्राण कर दिया है मेरी आंखों को,
जो तुम्हारी सुन्दरता को प्रतिबिम्बित करती थीं
और सुखा दिया है मेरे ओठों को,
जिन्हें मधुर बनाया था तुमने
अपने चुम्बन से।
प्रेयसि! तुम कहां हो?
क्या तुम मेरा रुदन सुनती हो सागर के उस पार से?
जानती हो क्या तुम मेरी आवश्यकता को?

क्या तुम मेरे धैर्य की महानता जानती हो ?

क्या कोई शक्ति है वायु में, जो समर्थ हो
तुमतक पहुंचाने में इस मरणासन्न युवक की श्वास को ?
क्या कोई गुप्त व्यवहार है
परस्पर देवदूतों में,
जो ले जाये तुमतक मेरा उद्‌गार ?

तुम कहां हो, मेरी सुन्दर तारिका ?
जीवन के अंधकार ने मुझे
अपनी छाती पर गिरा लिया है,
जीत शोक ने मुझे लिया है।
अपनी मुस्कान को वायु में तैरा दो,
मेरे पास वह पहुंच आयेगी
और मुझे जीवन प्रदान करेगी।
अपनी सुरभि फूंक पवन में दो—
वह मुझको जीवित रखेगी।

तुम कहां, हो मेरी प्रिया ?
उफ़, प्रेम कितना महान है !
और मैं कितना तुच्छ हूं !

मृत्यु का सौन्दर्य

(भाग एक—आह्वान)

मुझे सोने दो, क्योंकि मेरी आत्मा प्रेम से मस्त है ।
मुझे विश्राम करने दो, क्योंकि मेरे प्राण
दिनों और रातों का अपना पारितोषिक पा चुके हैं ।
मेरी शैया के चारों ओर दिये जलाओ और
सुगन्धित धूप सुलगाओ,
और मेरे शरीर पर चमेली जौर गुलाब की पत्तियां बिखेरो;
मेरे बालों में लोबान मलो और मेरे पैरों पर सुगन्धि छिड़को,
और उसे पढ़ो,
जो मृत्यु के हाथ ने मेरे मस्तक पर अंकित कर दिया है ।

मुझे महानिद्रा की बाहों में विश्राम करने दो,
क्योंकि मेरी अपलक आंखे थक गई हैं;
रजत-तारों की वीणा को झंकृत होने दो और
मेरी आत्मा को शान्ति प्रदान करने दो;
बीन और सारंगी से मेरे मुरझाते हुए हृदय के चारों ओर
एक आवरण बुनो ।
जैसे ही तुम मेरी आंखों में आशा का प्रभात देखो,
अतीत के गीत गाओ,
क्योंकि, उसका सम्मोहक अर्थ एक कोमल शैया है,

जिसपर मेरा हृदय विश्राम करता है।

अपने आंसू पोंछो, मेरे मित्रों ! और अपने सर उठाओ,
जैसे पुष्प
प्रभात का अभिनन्दन करने के हेतु अपने शीश उठाते हैं।
मृत्यु-वधू की ओर देखो, एक ज्योति-पुन्ज के समान खड़ी हुई है
जो मेरी शैया और अनन्त के बीच;
अपनी सांस रोककर मेरे साथ सुनो उसके श्वेत पंखों की
इंगित करती हुई सरसराहट।

पास आओ और मुझे बिदाई दो, मुस्कराते हुए
ओठों से मेरी आंखों का स्पर्श करो।
बच्चों को कोमल और गुलाबी अंगुलियों से मेरा हाथ पकड़ने दो,
वृद्धों को उभरी हुई नसोंवाले अपने हाथ मेरे सर पर रखने दो
और देने दो आशीश मुझे;
कुमारियों को निकट आने दो
और मेरी आंखों में ईश्वर की छाया देखने दो,
औरसुनो मेरी सांसों के साथगतिमानउसकी इच्छाकी प्रतिध्वनि।

(भाग दो— आरोहण)

मैं एक पर्वत शिखर पार कर चुका हूं और मेरी आत्मा
सम्पूर्ण और असीम मुक्ति के नभमण्डल में उड़ रही है;
मैं दूर हूं, बहुत दूर, मेरे साथियो ! और बादल
पहाड़ियों को मेरी आंखों से ओट कर रहे हैं।
घाटियों में निस्तब्धता के सागर की बाढ़ आ रही है,

और विस्मृति के हाथ सड़कों और घरों को ढंक रहे हैं;
मैदान और खेत अदृश्य हो रहे हैं एक श्वेत धुन्ध के पीछे,
जो दिखाई देती है वसन्त की बदली के समान,
दीपशिखा-जैसी पीली
और सन्ध्या वेला-जैसी लाल।

लहरों के गीत और स्रोतों के राग
बिखरे हुए हैं, और जन-समुदायों का कोलाहल
नीरवता को प्राप्त हो गया है;
और मैं आत्मा की अभिलाषाओं से एक-लय
अनन्त के संगीत के अतिरिक्त कुछ नहीं सुन सकता।
मैं पूर्ण श्वेत-ता में आवृत हूं;
मैं सुख में हूं, मैं शान्ति में हूं।

(भाग तीन—अवशेष)

मुझे इस सफेद कफ़न से अनावृत करना और आवृत करना
चमेली और कुमुदिनी की पत्तियों में,
मेरे शरीरको हाथी-दांत की मंजूषा से निकालना और उसे
लिटाना नारंगी के बौरों के तकियों पर।
मेरे लिए शोक मत करना, बल्कि
यौवन और हर्ष के गीत गाना;
मेरे लिए आंसू मत बहाना, बल्कि
फसल काटने और मधुसिंचन के गीत गाना;
पीड़ा का उच्छ्‌वास मत लेना, बल्कि

अपनी अंगुली से मेरे मुख पर
प्रेम और आनन्द का चिह्न अंकित करना।
मंत्रों और प्रार्थनाओं से वायु की शान्ति भंग मत करना, बल्कि
अपने हृदयों को मेरे साथ अनन्त जीवन के गीत गाने देना;
काले कपड़ों से मेरे लिये शोक प्रकट मत करना, बल्कि
रंगीन वस्त्र पहनना और मेरे साथ आनन्द मनाना;
अपने अन्तर में व्यथा लिये मेरी विदा की बात मत करना;
अपनी आंखें बन्द करना
और तुम मुझे सदा-सर्वदा अपने साथ देखोगे।

मुझे पत्तियों के ढेर पर रखना
और मुझे ले चलना अपने उदार कन्धों पर
और निर्जन वन की ओर धीरे-धीरे चलना।
मुझे घनी कब्रोंवाले श्मशान में मत ले जाना कि कहीं मेरी निद्रा
अस्थि-पंजरों की खड़खड़ाहट से भंग न हो जाय।
मुझे सरों के वन में ले चलना और मेरी कब्र वहां खोदना,
जहां बनफ्शे और पोस्त के फूल दूसरों की छाया में न उगते हों;
मेरी कब्र गहरी रखना, ताकि पानी की बाढ़
मेरी हड्डियों को खुली घाटी में न बहा ले जाय;
मेरी कब्र चौड़ी रखना, ताकि संध्याबेला की छाया
आकर मेरे पास बैठे।

मुझपर से सारे लौकिक आवरण हटा लेना और
मुझे मां वसुन्धरा के गर्भ में गहरे रख देना;

और रख देना मुझे सावधानी से मेरी मां की छाती पर।
मुझे ढक देना नरम मिट्टी से, और हर मुट्ठी मिट्टी में
चमेली, कुमुदिनी और मेंहदी के बीज मिले हों;
मेरे ऊपर फिर जब ये बीज उगेंगे और मेरी काया के तत्वों से
पोषित होंगे,
वे मेरे हृदय की सुरभि को गगनांक में परिव्याप्त करेंगे;
और सूर्य तक को भी मेरी शान्ति के रहस्य से उजागर करेंगे;
और वायु के साथ बहेंगे और पथिक को सुख प्रदान करेंगे।

तब मेरे पास से जाना, मित्रो ! मुझे छोड़ देना
और चले जाना निःशब्द पदों से, ऐसे ही जैसे—
जैसे निर्जन घाटी में नीरवता चलती है;
मुझे भगवानके भरोसे छोड़ देना और खुद धीरे-धीरे बिखर जाना
जिस तरह बादाम और सेव की कलियां
निसान की समीर की लहरों में बिखर जाती हैं।

अपने घरों के आनन्द का उपभोग करने के लिए वापस चले जाना
और वहां तुम्हें वह चीज मिलेगी,
जिसे मृत्यु तुमसे और मुझसे अलग नहीं कर सकती।
यह स्थान छोड़ देना,
क्योंकि जो कुछ तुम यहां देखते हो,
उसका तात्पर्य नश्वर जगत से बहुत दूर है।
छोड़ देना, मुझे।

महल और झोंपड़ी

(भाग एक)

निशा के आगमन और विशाल भवन में दीपकों के जगमगाने के साथ दास सिंह द्वार पर खड़े होकर अतिथियों की प्रतीक्षा करने लगे; और उनके मखमल के वस्त्रों पर सुनहरे बटन चमचमाने लगे।

शोभायुक्त गाड़ियां प्रासाद के उद्यान में आईं और भड़कीले वस्त्रों से सुसज्जित और जवाहरातों से अलंकृत प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने प्रवेश किया। वाद्ययन्त्रों ने वायु को सुमधुर रागों से भर दिया और उच्च पदाधिकारी सुखदायी संगीत पर नृत्य करने लगे।

अर्ध-रात्रि के समय सबसे, उत्तम और सबसे स्वादिष्ट भोजन एक सुन्दर और अनेक प्रकार के दुर्लभ फूलों से सुसज्जित मेज पर परोसा गया। जबतक मदिरा ने स्वाभाविक प्रभाव दिखाना प्रारम्भ नहीं कर दिया, आगन्तुक खुलकर खाते-पीते रहे। प्रभात काल में यह समूह एक लम्बी रात मदिरा-पान और भोजन करने में बिताकर, जिसने उनके शिथिल शरीरों को अस्वाभाविक निद्रा में अपनी गुदीगुदी शैयाओं पर गिराने की जल्दी कराई, शोर मचाता बिखर गया।

(भाग दो)

सांझ के समय, एक मनुष्य मजदूरों के कपड़े पहने हुए अपने

छोटे-से घर के द्वार पर खड़ा हुआ और उसने दरवाजा खटखटाया। जब द्वार खुला, वह अन्दर गया और घरवालों का प्रसन्नता-पूर्वक अभिवादन किया, और फिर अपने बच्चों के बीच बैठ गया, जो अंगीठी के पास खेल रहे थे। थोड़ी-सी देर में उसकी स्त्री ने भोजन तैयार किया और वे लकड़ी की एक मेज पर भोजन करने बैठ गये। भोजन कर चुकने के पश्चात वे दिये के चारों ओर एकत्रित हुए और दिन-भर की घटनाओं के विषय में बातें करने लगे। जब एक पहर रात बीत गई, सब चुपचाप खड़े हो गये और उन्होंने अपने ओठों पर स्तुति-गीत और कृतज्ञता-भरी प्रार्थना लिए अपने-आपको निद्रा देवी को समर्पित कर दिया।

कवि की वाणी

(भाग एक)

दान की शक्ति ने मेरे हृदय में गहरी बुआई की है और मैं गेहूं को काटकर गट्ठरों में बांधता हूं और उन्हें भूखों को देता हूं।

मेरी आत्मा द्राक्षलता को जीवन प्रदान करती है और मैं उसके गुच्छों को निचोड़ता हूं और उसका रस प्यासों को देता हूं।

स्वर्ग मेरा दिया तेल से भरता है और मैं उसे अनजानों को राह दिखाने लिए अपनी खिड़की में रख देता हूं।

मैं ये सब कार्य करता हूं, क्योंकि मैं उन्हीं में जीवित हूं; और यदि नियति मेरे हाथ बांध दे और मुझे ऐसा करने से रोके, तो मृत्यु ही मेरी एकमात्र आकांक्षा होगी, क्योंकि मैं कवि हूं और यदि मैं देने में असमर्थ हुआ, तो मैं लेने से इन्कार कर दूंगा।

मानव-समाज अंधड़ के समान उत्पात मचाता है, परन्तु मैं नीरवता में उसांस भरता हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि ईश्वर के पास उसांस पहुंच जाती है और तब तूफान शांत हो जाता है।

मनुष्य सांसारिक वस्तुओं से चिपटे रहते हैं, परन्तु मैं सदैव प्रेम की मसाल का आलिंगन करने का ही प्रयत्न करता हूं, ताकि वह अपनी अग्नि से मुझे विशुद्ध बना दे और मेरे हृदय की पाशविकता को जला दे।

वैभव की वस्तुएं मनुष्य को पीड़ा के बिना ही निष्प्राण कर देती हैं; प्रेम उसे प्राणदायक पीड़ा के प्रति सजीव करता है।

मनुष्य भिन्न-भिन्न वर्गों और जातियों में विभाजित हैं, और भिन्न-भिन्न देशों और नगरों के निवासी हैं। परन्तु मैं अपने-आपको समस्त सम्प्रदायों से अलग पाता हूं और किसी बस्ती विशेष का निवासी नहीं हूं। विश्व मेरा देश है और मानव समाज मेरी जाति।

मनुष्य दुर्बल हैं, और यह खेद है कि वे अपने को आपस में विभाजित कर लेते हैं। संसार संकीर्ण है, और उसे राज्यों, साम्राज्यों और प्रान्तों में बांटना बुद्धिहीनता है।

मनुष्य अपने को केवल आत्मा के मन्दिरों को नष्ट करने के लिए एक करते हैं और लौकिक शरीरों के लिए भवनों का निर्माण करने के लिए ही मिलकर काम करते हैं। मैं अकेला खड़ा हूं, अपने स्वयं की गहराई में आशा की वाणी को यह कहते सुनते हुए :

"जिस प्रकार प्रेम मनुष्य के हृदय को पीड़ा से सजीव करता है, उसी प्रकार अज्ञान उसे ज्ञान का रास्ता बताता है।"

पीड़ा और अज्ञान परम उल्लास और ज्ञान की ओर ले जाते हैं, क्योंकि परम पुरुष ने आकाश के नीचे किसी वस्तु की व्यर्थ रचना नहीं की है।

(भाग दो)

अपने सुन्दर देश के प्रति मुझमें चाहना है, और मैं उसके निवासियों से उनकी गरीबी के कारण प्रेम करता हूं। परन्तु यदि मेरे देशवासी विद्रोह करें, लूट-मार से उत्साहित होकरऔर जिसे वे 'देशभक्ति की भावना' कहते हैं, उससे प्रेरित होकर हत्या करने के लिए मेरे पड़ोसी के देश पर आक्रमण करें, तो

मनुष्य के साथ किसी भी क्रूरता करने के कारण मैं अपने देश-वासियों और देश से घृणा करूंगा।

मैं अपने जन्म-स्थान का गौरव-गान करता हूं और अपने बचपन की क्रीड़ा-भूमि को देखने के लिए आतुर रहता हूं, परन्तु यदि उस भूमि के निवासी दीन राहगीर को आश्रय देने और भोजन कराने से इन्कार कर दें, तो मैं अपने गौरव-गान को व्याजस्तुति में और अपनी चाहना को विस्मृति में परिणत कर दूंगा। मेरे अन्तर की वाणी कहेगी, "वह घर जो दीनों की सेवा नहीं करता, विनष्ट किये जाने के अतिरिक्त किसी योग्य नहीं है।"

अपने देश के प्रति जो मेरा प्रेम है, उसके कुछ अंश में मैं अपने जन्म के गांव को प्यार करता हूं; और मै अपने देश को प्यार करता हूं पृथ्वी—जो कि सारी-की-सारी मेरा देश है—के प्रति अपने प्रेम के एक अंश में; और मैं पृथ्वी को प्यार करता हूं अपने-आपके-सर्वस्व से, क्योंकि वह मानवता का, ईश्वर की प्रत्यक्ष आत्मा का निवास-स्थान है।

मानवता पृथ्वी पर परमेश्वर की आत्मा है और यह मानवता विध्वंस के बीच खड़ी हुई है, अपनी नग्नता को जर्जर चिथड़ों में छिपाये हुए, पिचके गालों पर आंसू बहाते हुए, और दयनीय वाणी में अपने बच्चों को पुकारते हुए। परन्तु बच्चे अपना जातीय गान गाने में मग्न हैं; वे तलवारों पर धार रखने में रत हैं और अपनी मां की पुकार नहीं सुन सकते।

मानवता बार-बार अपने लोगों को पुकारती है। परन्तु वे सुनते नहीं। यदि कोई सुनता, और मां के आंसू पोंछकर उसे सान्त्वना देता, तो दूसरे कहते, "वह दुर्बल है, भावना से

प्रभावित ।"

मानवता पृथ्वी पर परमेश्वर की आत्मा है, और वह परमेश्वर प्रेम और सद्‌भावना का उपदेश देता है। परन्तु लोग ऐसे उपदेशों की हंसी उड़ाते हैं। ईसा मसीह ने उन्हें सुना, और उन्हें सूली पर चढ़ना पड़ा; सुकरात ने उस वाणी को सुना और उसका अनुकरण किया, और उसके भी शरीर का बलिदान हुआ। ईसा और सुकरात के अनुयायी सत्य के अनूयायी हैं, और चूंकि लोग उन्हें मारते नहीं, वे उनका मजाक उड़ाते हैं, यह कहकर, "उपहास मृत्यु से अधिक कटु है।"

यरूशलम ईसा मसीह को मार नहीं सका, न एथेन्स सुकरात को; वे अब भी जीवित हैं और अनन्त कालतक जीवित रहेंगे। उपहास सत्य के अनुयायिओं पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता। वे सदैव जीवित रहते हैं और बढ़ते रहते हैं।

(भाग तीन)

तुम मेरे भाई हो, क्योंकि तुम मनुष्य हो, और हम दोनों एक ही पवित्र आत्मा के पुत्र हैं; हम बराबर हैं और उसी मिट्टी के बने हैं।

तुम यहाँ जीवन के पथ पर मेरे साथी हो, और गूढ़ सत्य का अर्थ समझने में मेरे सहायक। तुम एक मनुष्य हो और क्योंकि यही कारण पर्याप्त है, मैं तुम्हें भाई के समान प्यार करता हूं। तुम मेरे लिए जो चाहो सो कह सकते हो, क्योंकि आनेवाला कल तुम्हें संसार से ले जायगा और तुम्हारे कहे को निर्णय के लिए प्रमाण के रूप में प्रयुक्त करेगा और तुम्हारे साथ न्याय होगा।

मेरे पास जो कुछ है, तुम मुझे उससे वंचित कर सकते हो, क्योंकि मेरी लोलुपता ने मुझे धन-संग्रह के लिए उकसाया और तुम मेरा भाग पाने के अधिकारी हो—यदि उससे तुम्हें सन्तोष हो।

तुम मेरे साथ जो चाहो कर सकते हो, परन्तु तुम मेरे सत्य को छूने में समर्थ नहीं होंगे।

तुम मेरा लहू बहा सकते हो और मेरे शरीर को जला सकते हो, परन्तु तुम मेरी आत्मा का हनन नहीं कर सकते।

तुम मेरे हाथों को जंजीरों में और मेरे पैरों को बेड़ियों में जकड़ सकते हो और मुझे अन्धेरे बन्दीगृह में डाल सकते हो, परन्तु तुम मेरे विचारों को बन्दी नहीं बना सकते, क्योंकि वे स्वतन्त्र हैं, विस्तृत आकाश में वायु के समान।

तुम मेरे भाई हो और मैं तुम्हें प्यार करता हूं। मैं तुम्हें—तुम्हारे गिर्जाघर में पूजा करते, तुम्हारे मन्दिर में दंडवत करते और तुम्हारी मस्जिद में नमाज पढ़ते—प्यार करता हूँ। तुम और मैं और सब एक ही धर्म के बच्चे हैं, क्योंकि धर्म के भिन्न भिन्न मार्ग केवल परमात्मा के प्यार-भरे हाथ की अंगुलियाँ हैं, सबकी ओर फैली हुई, सबको आत्मा की सम्पूर्णता का दान देती हुई, सबको अपने पास बुलाने के लिए उत्सुक।

मैं तुमको तुम्हारे ज्ञान से प्राप्त तुम्हारे सत्य के लिए प्यार करता हूं; वह सत्य, जिसे मैं अपने अज्ञान के कारण देख नहीं सकता। किन्तु मैं उसका एक दैवी वस्तु के रूप में आदर करता हूं, क्योंकि वह आत्मा की कृति है। तुम्हारा सत्य मेरे सत्य से भावी विश्व में मिलेगा और वे फूलों की सुरभि के समान परस्पर

एकाकार हो जायेंगे और एक सम्पूर्ण और सनातन सत्य बन जायेंगे—प्रेम और सौन्दर्य की अनन्तता में स्थिर और निवास करते हुए।

मैं तुम्हें प्यार करता हूं, क्योंकि तुम शक्तिशाली उत्पीड़क के समक्ष दुर्बल हो और लोलुप धनी के समक्ष निर्धन। इन कारणों से मैं आँसू बहाता हूं और तुम्हें सान्त्वना देता हूं; और अपने आँसुओं के पीछे से मैं तुम्हें न्याय की भुजाओं में मुस्कराते हुए और अपने पीड़कों को क्षमा करते हुए आलिंगन-बद्ध देखता हूं, तुम मेरे भाई हो और मैं तुम्हें प्यार करता हूं।

(भाग चार)

तुम मेरे भाई हो, परन्तु तुम मुझसे झगड़ा क्यों कर रहे हो ? उन लोगों को प्रसन्न करने की गरज से, जो गौरव और सत्ता के भूखे हैं, तुम मेरे देश पर आक्रमण क्यों करते हो और मुझे परतन्त्र बनाने का प्रयत्न क्यों करते हो ?

तुम अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़कर दूर देश में मृत्यु का अनुसरण क्यों करते हो--उन लोगों के लिए, जो तुम्हारे लहू से गौरव खरीदते हैं और तुम्हारी मां के आँसुओं से प्रतिष्ठा?

क्या मनुष्य का अपने भाई मनुष्य को मार डालने में ही मान है ? यदि तुम उसे गौरव समझते हो, तो उसे पूजा का रूप दो, और एक मन्दिर बनाओ केनx का, जिसने अपने भाई एबेलxx की हत्या की थी।

क्या आत्म-रक्षा ही प्रकृति का पहला नियम है ? फिर लोभ तुम्हारे भाइयों को पीड़ा देने में अपने लक्ष्य की प्राप्ति के

---

x–xx बाइबिल में वर्णित पात्र

लिए ही तुम्हें आत्म बलिदान करने के लिए क्यों प्रेरित करता है ? मेरे भाई ! सावधान रहो उस नेता से, जो कहता है, "जीने की चाह हमें लोगों से उनके अधिकार छीन लेने के लिए बाध्य करती है !"

मैं तुमसे केवल यही कहता हूं :

"दूसरों के अधिकारों की रक्षा करना सबसे सुन्दर और श्रेष्ठतम मानवीय कर्म है । यदि मेरे अस्तित्व के लिए यह आवश्यक है कि मैं दूसरों की हत्या करूं, तो मेरे लिए मृत्यु अधिक श्रेयस्कर है, और यदि मैं किसी ऐसे को नहीं पा सकता, जो मेरे मान की रक्षा के लिए मेरी हत्या कर दे, तो अनंत के आगमन के पूर्व ही अनंत के लिए अपने ही हाथों अपने प्राणों का अन्त कर देने में आगा-पीछा नहीं करूंगा ।"

स्वार्थपरता, मेरे भाई, अन्ध श्रेष्ठता का मूल है, और श्रेष्ता दलबन्दी को जन्म देती है, और दलबन्दी जन्म देती है सत्ता को, जो कलह और दमन की ओर ले जाती है ।

आत्मा अंधियाले अज्ञान के ऊपर ज्ञान और न्याय की शक्ति में विश्वास रखती है; वह उस शक्ति का निषेध करती है, जो अज्ञान और निर्दयता की रक्षा करने और शक्ति वढ़ाने के लिए तलवारें प्रदान करती है—वह शक्ति, जिसने बेबीलोन को नष्ट कर दिया और यरूशलम की नींव को हिला दिया और रोम को खण्डहर बना दिया । यही वह चीज है, जिसने अपराधियों को लोगों से महापुरुष कहलवाया; उनके नामों की लेखकों से प्रतिष्ठा करवाई; उनकी अमानुषिकता की कहानियों का इतिहासकारों से प्रशंसा के रूप में वर्णन करवाया ।

मैं जिस एकमात्र शक्ति की आज्ञा मानता हूं, वह न्याय के प्राकृतिक नियम के अभिरक्षण और उसे स्वीकार करने का ज्ञान है।

सत्ता किस न्याय का प्रदर्शन करती है, जब वह हत्यारे की हत्या करती है ? जब वह लुटेरे को बन्दी करती है ? जब वह पड़ोसी देश पर चढ़ाई करतो है और वहां के निवासियों का रक्त बहाती है ? न्याय उस सत्ता के विषय में क्या सोचता है, जिसके अधीन एक हत्यारा उसे सजा देता है, जो हत्या करता है, और एक चोर उसे सजा देता है, जो चोरी करता है ?

तुम मेरे भाई हो, और मैं तुम्हें प्यार करता हूं; प्रेम ही न्याय है—अपने पूरे जोर और मान के साथ। तुम्हारी जाति ग्रौर सम्प्रदाय का विचार किये बिना यदि न्याय तुम्हारे प्रति मेरे प्रेम का समर्थन नहीं करता है, तो मैं स्वार्थपरता की कुरूपता को पवित्र प्रेम के बाह्य आडम्बर के पीछे छिपाये हुए एक पाखण्डी हूं।

(निष्कर्ष)

मेरी आत्मा मेरी मित्र है, जो जीवन के दुख और क्लेश में मुझे धीरज देती है। वह जो अपनी आत्मा से मैत्री नहीं करता, मानवता का शत्रु है, और वह जो मानव-कल्याण की भावना अपने अन्तर में ही नहीं पाता, वह बुरी तरह से मरेगा। जीवन भीतर से ही प्रस्फुटित होता है, आस-पास के तत्त्वों से उत्पन्न नहीं होता।

मैं एक शब्द कहने के लिए आया था ग्रौर वह शब्द मैं अब कहता हूं। परन्तु यदि मृत्यु ने उसके कहे जाने में बाधा डाल दी, तो आनेवाला कल उसे कहेगा, क्योंकि आनेवाला कल

अनन्त की पुस्तक में कोई रहस्य नहीं रहने देता।

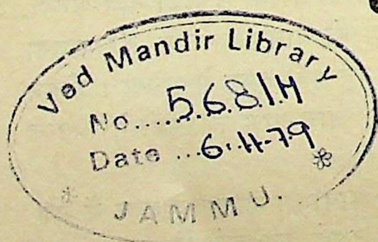
मैं प्रेम के वैभव और सुन्दरता व प्रकाश में, जो ईश्वर के प्रतिबिम्ब हैं, निवास करने के लिए आया था। मैं यहाँ निवास कर रहा हूं, और लोग मुझे जीवन के साम्राज्य से निर्वासित नहीं कर सकते, क्योंकि वे जानते हैं कि मैं मृत्यु में भी जीवित रहूंगा। यदि वे मेरी आँखे निकाल लें, तो मैं प्रेम के मन्द-स्वर और सुन्दरता के गीत सुनूंगा।

यदि वे मेरे कानों को बन्द करदें तो मैं प्रेम की सुगन्धि और सुन्दरता की सुरभि-मिश्रित वायु के स्पर्श का आनन्द लाभ करूंगा।

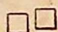
यदि वे मुझे शून्य-स्थान में रख दें, तो मैं प्रेम और सुन्दरता की सन्तान, अपनी आत्मा, के साथ रहूंगा।

मैं यहां आया था सबका और सबके साथ होने के लिए, और आज अपने एकान्त में जो करता हूं, उसे आनेवाला कल लोगों के लिए दोहरायेगा।

आज मैं एक हृदय से कह रहा हूं, कल उसे अनगिनत हृदय कहेंगे।



मंडल द्वारा प्रकाशित
खलील जिब्रान का साहित्य



- विद्रोही आत्माएं
- जीवन-संदेश
- हीरे और मोती
- पागल
- बटोही
- तूफान
- शैतान
- धरती के देवता
- आंसू और मुस्कान